कर्म विज्ञान

भाग-३

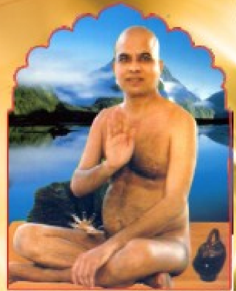

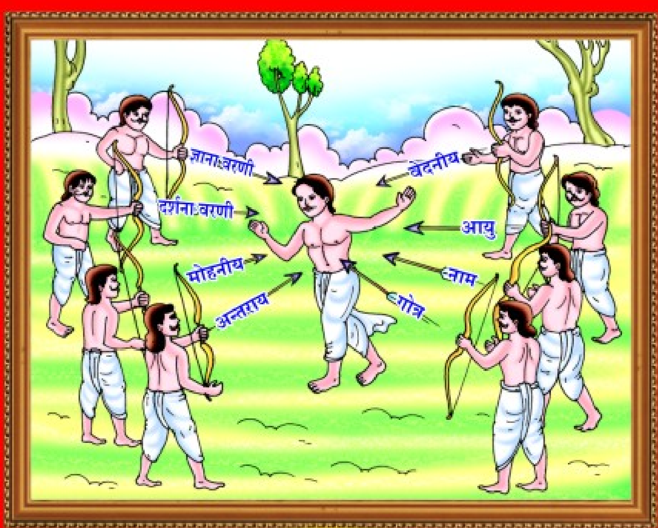

-:लेखक:-
प.पू. गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज

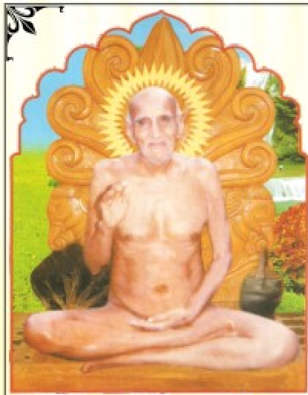

आचार्य श्री 108 विमल सागरजी महाराज

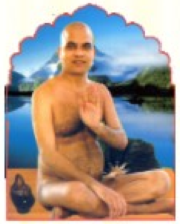

प. पू. गणाचार्य
श्री विरागसागरजी महाराज

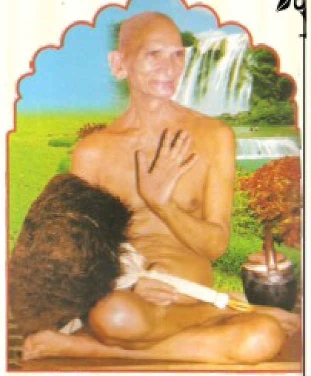

आचार्य श्री 108 सन्मतिसागरजी महाराज

जीवन बिन्दु

पूर्व नाम	:	अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म	:	2 मई 1963, गुरूवार (बैसाख सुदी 9 सं. 2020)
माता-पिता	:	श्रीमती श्यामादेवी जैन (समाधिस्थ आ. विशांत श्री माताजी) श्रीमान् कपूरचंदजी जैन (संघस्थ प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज)
बहिन	:	श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई	:	श्री विजयकुमार, श्री सुरेन्द्रकुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्रभैयाजी
लौकिक शिक्षा	:	इण्टर, मध्यमा पथरिया, श्री शान्ति निकेतन, दि. जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी (म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा	:	20 फरवरी 1980 (फाल्गुन शु. 5 सं. 2036 बुद्वार, शहडोल)
नामकरण	:	पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्ण सागरजी महाराज
क्षु.दीक्षा गुरू	:	परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य 108 सन्मति सागरजी महाराज
मुनि दीक्षा	:	9 दिस. 1983 (मगसर शु. 5, विं.सं. 2040 औरंगाबाद (महा.)
नामकरण	:	प.पू. मुनि श्री 108 विरागसागरजी महाराज
मुनि दीक्षा गुरू	:	प.पू. वात्सल्य दिवाकर आचार्य श्री 108 विमल सागरजी महाराज
आचार्य पद	:	8 नव. 1992 (कार्तिक शु. 13 वि.सं. 2049, रविवार, द्रोणगिर)
संयम सृजन	:	आचार्य - 8, मुनि - 55, गणिनी - 4, आर्यिका - 52, ऐलक - 4, क्षुल्लक - 33, क्षुल्लिका - 17 तथा ब्रह्मचारी भाई-बहिनें - 50 **कुल- 173**
समाधिसल्लेखनाऐं	:	35
चातुर्मास	:	1980 से 2011 तक क्रमश : दुर्ग (छत्तीस), कारंजा (लाड-महा.), कारंजा (लाड-महा.) नागपुर (महा.), भावनगर (गुज.), पांचवा (राज.), निमाज (राज), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), बीना (म.प्र.), ललितपुर (उ.प्र.), मढ़ियाजी (जबलपुर), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), शिखरजी (झारखण्ड), गया (बिहार), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), भिलाई (छत्तीस), कारंजा (लाड - महा.), मूढबिद्री (कर्ना), मेलचितामूर (तमिल.), उदगांव (महा.) मुम्बई (महा.), गांधीनगर (गुज.), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.)

॥ ॐ ॥

कर्म विज्ञान

भाग - 3

लेखक

उपसर्ग विजेता, चरित्र शिरोमणी, प्रज्ञाश्रमण

प.पू.गणाचार्य श्री १०८ विराग सागर जी महाराज

प्रकाशक

(सम्यग्ज्ञान प्रकाशन विभाग)

श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ

बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)

* **प्रसंग** - प.पू. गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज की स्वर्णिम जन्म जयन्ति, यति सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण के पावन अवसर पर

* **कृति** - कर्म विज्ञान भाग–3

* **लेखक** - प.पू. गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज

* **संस्करण** -
  I
  II
  III
  IV - 2005
  V - 2012, 1000 प्रतियाँ (जयपुर–राज.)

* **पुण्यार्जक**:- जिनेन्द्र जैन, बांसवाड़ा (राज.)

* **मूल्य** :- पुनः प्रकाशन हेतु 10/– रूपये

* **प्रकाशक** :- (सम्यग्ज्ञान प्रकाशन विभाग)
  श्री सम्यग्ज्ञान दिग. जैन विराग
  विद्यापीठ, बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
  सम्पर्क सूत्र – 09754803220

* **मुद्रक**:- अरिहंत ऑफसेट एण्ड कम्प्यूटर्स
  केकड़ी (जिला – अजमेर–राज.)
  मो. 9252060486

विचार बिन्दु

कर्म सिद्धान्त की जितनी सुन्दर, सूक्ष्म, विशद् एवं सांगोपांग व्याख्या जैन दर्शन ने की है उतनी विश्व के किसी भी दर्शन ने नहीं की है, उसे समझाने में जैनाचार्यों ने महत्त्वपूर्ण प्रयास किये हैं, यही कारण है कि उपलब्ध सभी जैन शास्त्रों में 'कर्म सिद्धान्त' विषयक ग्रन्थ सर्वाधिक प्राचीन एवं बहुसंख्यक है। जैनागम की प्रथम लिपि का भी शुभारम्भ इसी कर्म सिद्धान्त के सर्वोपरि ग्रन्थ 'श्री षट्खण्डागम' से ही हुआ है। 'कर्म सिद्धान्त' एक ऐसा महत्त्वशाली सिद्धान्त है कि जिसके जाने बिना साधक का साधना के विषय में एक भी सच्चा एवं ठोस कदम नहीं उठ सकता है; क्योंकि 'कर्म सिद्धान्त' पहले साधक के हृदय को भव भय से कंपायमान करता है फिर उसकी हृदय भूमिका का निर्माण करता है। पश्चात् साधना का उसमें बीजारोपण करता है, जिससे अच्छी, सच्ची और सुन्दर साधना फूलती–फलती है। दूसरे शब्दों में निखरे व्यक्ति की साधना निखरी ही होती है। इसी कारण से प्राचीन आचार्यों ने 'प्रथम करणं चरणं द्रव्यं नमः' वाक्य में करणं अर्थात् करणानुयोग 'कर्म सिद्धान्त' को चरणं चरणानुयोग के पूर्व रखा। यह उनकी बहुत बड़ी सूझबूझ थी।

आज का मनुष्य जो बड़े से बड़े पाप कार्यों के करने में सहसा तैयार हो जाता है उसे करने में जरा भी नहीं हिचकता इसका मूल कारण है 'कर्म सिद्धान्त' विषयक अज्ञानता। यद्यपि 'कर्म सिद्धान्त' कठिन एवं कड़वा जरूर है, किन्तु यह चिरायते की भांति व्यक्ति के अनाचार, दुराचार, कदाचार रूप ज्वर को समूल नष्ट करने में समर्थ है। यदि आज के समय ने 'कर्म सिद्धान्त' को महत्त्व दिया तो मनुष्यों के हृदय परिवर्तन के साथ उनमें बढ़ रहे अनाचरण, पापाचरण, हिंसा, चोरी, लूटमारी, अन्याय, अनीति इत्यादि को भी रोकथाम करेगा। उनमें नैतिकता, सादगी एवं धर्माचरण को जन्म देगा, जिससे पारस्परिक हार्दिक प्रेम, वात्सल्य एवं सेवाभाव का भी उदय होगा। तात्पर्य यह है कि आज वर्तमान में अध्यात्म से भी बढ़कर आवश्यक है 'कर्म सिद्धान्त' को जानना। यदि कर्म सिद्धान्त सही रहा तो वह अध्यात्म को भी सच्चे रूप में हृदय में समाहित कर देगा और फिर ममतामयी माँ के सदृश्य निःस्वार्थ उसका भरण पोषण रक्षा एवं विकास करेगा। प्रत्येक प्राणी कर्म विषयक ज्ञान में प्रवेश कर अपनी आत्मा को कृतकर्मों से मुक्त कर पावन बना सकें। हम सभी नवीन कर्मबंध से बच सकें इसी उद्देश्य को लेकर 'कर्म विज्ञान भाग 1–2' की भांति तीसरे भाग का सृजन किया है। तथा संशोधन परिवर्तन के साथ यह उसकी चतुर्थ आवृत्ति पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित हो रही है। यद्यपि यह भाग कठिन जरूर है किन्तु कर्म विषयक शास्त्रों में प्रवेश देने का मौलिक अधिकार रखता है। मुझे विश्वास है कि इससे पाठकगण अवश्य ही लाभान्वित होंगे। इसके प्रकाशन में श्रीमान् सुनील जिनदास भुसारी व्याहाड ने तत्परता से अपनी लक्ष्मी का उपयोग श्रुत प्रभावना कार्य में किया एतदर्थ उन्हें मेरा शुभाशीष है। संघस्थ श्री मुनि महाराज ने जिनवाणी के प्रकाशन कार्य में अपना उपयोग लगाया जिससे इसका प्रकाशन संपन्न हुआ उन्हें भी मेरा शुभाशीष है कि वे निरन्तर इसी प्रकार धर्म प्रभावना करते रहें।

कारंजा (लाड)
भ. पार्श्वनाथ जयंति
वी.नि.सं. 2831

ॐ नमः
आचार्य विरागसागर

कहाँ क्या है

पाठ	क्या	कहाँ	प्रश्न संख्या
1.	मूलकर्म– स्थितिबंध	पृष्ठ– 5	कुल 23 प्रश्न
2.	उत्तर कर्मप्रकृति– स्थितिबंध	8	22
3.	कर्म आबाधा	14	33
4.	दश–करण	19	55
5.	संक्रमण के प्रभेद	25	30
6.	बंध–अबंध–बंध व्युच्छित्ति	31	22
7.	सत्त्व–असत्त्व–सत्त्व व्युच्छित्ति	35	33
8.	उदय–अनुदय–उदय व्युच्छित्ति	40	20
9.	परिशिष्ट–संदर्भित ग्रंथ संकेत	44	
10.	साहित्य लिस्ट	47	
		महायोग	238

1. मूलकर्म स्थिति-बंध

प्रश्न 1 स्थिति बंध किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्मों के बंध रूप रहने की समय–सीमा को स्थिति बंध कहते हैं।

प्रश्न 2 स्थिति बंध का मूल हेतु क्या है ?

उत्तर स्थिति बंध का मूल हेतु कषाय है।

प्रश्न 3 स्थिति बंध का मूल हेतु कषाय होने पर भी उसमें तारतम्यता क्यों आती है ?

उत्तर संसारी जीवों के स्थिति बंध का मूल कारण कषाय होने पर भी भावों में तीव्र, मंद, ज्ञात, अज्ञात भाव, अधिकरण और वीर्य (शक्ति) विशेष के कारण स्थिति बंध में भी तारतम्यता (हीनाधिकता) आती है।

प्रश्न 4 ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति बताइये ?

उत्तर ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट स्थिति 30 कोड़ा–कोड़ी सागर है।

प्रश्न 5 दर्शनावरणीय कर्म की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर दर्शनावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट स्थिति 30 कोड़ा–कोड़ी सागर है।

प्रश्न 6 वेदनीय कर्म की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति बाहर मुहूर्त है और उत्कृष्ट स्थिति 30 कोड़ा–कोड़ी सागर है।

प्रश्न 7 मोहनीय कर्म की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर मोहनीय कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट स्थिति 70 कोड़ा–कोड़ी सागर प्रमाण है।

प्रश्न 8 आयु कर्म की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर आयु कर्म की जघन्य स्थिति अंतर्मूहूर्त है और उत्कृष्ट स्थिति 33 सागर है।

प्रश्न 9 नाम कर्म की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर नाम कर्म की जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त है और उत्कृष्ट स्थिति 20 कोड़ा– कोड़ी है।

प्रश्न 10 गोत्र कर्म की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त है और उत्कृष्ट स्थिति 20 कोड़ा– कोड़ी सागर है।

प्रश्न 11 अतंराय कर्म की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर अतंराय कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट स्थिति 30 कोड़ा– कोड़ी सागर है।

प्रश्न 12 कितनी कर्म की प्रकृतियाँ बंध योग्य हैं ?

उत्तर भेद विवक्षा से 146 और अभेद विवक्षा से 120 प्रकृतियाँ बंध योग्य है।

प्रश्न 13 दोनों विवक्षाओं को स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर **भेद विवक्षा से** सम्यक्त्व और सम्यक् मिथ्यात्व इन दो प्रकृतियों के बिना 146 कर्म प्रकृतियों बंध योग्य है।

<u>अभेद विवक्षा से :–</u> 5 बंधन, 5 संघात इन 10 का 5 शरीर में अंतर्भाव हो जाता है। तथा 16 अन्तर भेदों का वर्णादि 4 मूलभेद में अन्तर्भाव हो जाने से 10+16= 26 प्रकृतियों को उपरोक्त में से घटा देने पर 120 प्रकृतियाँ बंध योग्य है।

प्रश्न 14 किस–किस परिणामों से जीव कैसा बंध करता है ?

उत्तर तिर्यंच, मनुष्य व देवायु बिना शेष 117 प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध तत्प्रयोग उत्कृष्ट संक्लेश परिणामों से होता है और जघन्य स्थिति बंध यथायोग्य विशुद्ध परिणामों से होता है।

तिर्यंच, मनुष्य व देवायु का भी स्थिति बंध यथायोग्य विशुद्ध परिणामों से उत्कृष्ट होता है तथा जघन्य स्थिति बंध यथायोग्य संक्लेश परिणामों से होता है।

प्रश्न 15 किस–किस कर्म प्रकृति का बंध कौन–कौन से जीव करते हैं ?

उत्तर आहारक द्विक, तीर्थंकर और देवायु इन 4 के बिना शेष 116 प्रकृतियों का उत्कृष्ट बंध मिथ्यादृष्टि जीव ही करते हैं।

प्रश्न 16 आहारक शरीर, आहारकांगोपांग, तीर्थंकर और देवायु का उत्कृष्ट स्थिति बंध कौन–कौन से जीव करते हैं ?

उत्तर उक्त चारों प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध सम्यदृष्टि जीव ही करते हैं।

प्रश्न 17 देवायु की उत्कृष्ट स्थिति को कौन से जीव और कब बाँधते हैं ?

उत्तर देवायु की उत्कृष्ट स्थिति को स्वस्थानअप्रमत्त गुणस्थान के सम्मुख प्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीव बाँधते हैं।

प्रश्न 18 आहारक द्विक की उत्कृष्ट स्थिति को कौन से जीव और कब बाँधते हैं ?

उत्तर आहारक द्विक की उत्कृष्ट स्थिति को प्रमत्त गुणस्थान के सम्मुख अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीव बाँधते हैं।

प्रश्न 19 तीर्थंकर प्रकृति की उत्कृष्ट स्थिति को कौन से जीव बाँधते हैं ?

उत्तर तीर्थंकर प्रकृति की उत्कृष्ट स्थिति को दूसरे, तीसरे नरक के सम्मुख क्षायोपशमिक असंयत सम्यग्दृष्टि मनुष्य ही बाँधते हैं।

प्रश्न 20 नरक, तिर्यंच, मनुष्यायु, वैक्रियक षट्, विकलत्रय, सूक्ष्म आदि तीन इस प्रकार कुल 15 प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध, कौन से जीव करते हैं ?

उत्तर नरक, तिर्यंच, मनुष्य आयु, वैक्रियिक षट्क (देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगत्यापूर्वी, वैक्रियिक शरीर और वैक्रियिक आंगोपांग) विकलत्रय, सूक्ष्म आदि तीन (सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त) इन पन्द्रह प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध मनुष्य और तिर्यंच जीव ही करते हैं।

प्रश्न 21 औदारिक द्विक, तिर्यग्द्विक, उद्योत, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन का उत्कृष्ट स्थिति बंध कौन से जीव करते हैं ?

उत्तर औदारिक द्विक, तिर्यग्द्विक, उद्योत व असंप्रप्तासृपाटिका संहनन का उत्कृष्ट स्थिति बंध मिथ्यादृष्टि देव और नारकी जीव ही करते हैं।

प्रश्न 22 एकेन्द्रिय, आतप और स्थावर, इन तीनों प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध कौन से जीव करते हैं ?

उत्तर एकेन्द्रिय, आतप और स्थावर, इन तीन प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध मिथ्यादृष्टि देव करते हैं।

प्रश्न 23 शेष 9 प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध कौन से जीव करते हैं ?

उत्तर शेष 9 प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध उत्कृष्ट संक्लेश परिणाम वाले तथा मध्यम संक्लेश परिणाम वाले चारों गतियों के जीव करते

2. उत्तर कर्मप्रकृति : स्थिति-बंध

प्रश्न 1 पाँचों ज्ञानावरणीय प्रकृति का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना होता है ?

उत्तर पाँचों ज्ञानावरणीय कर्म प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध 30 कोड़ा–कोड़ी सागर तथा जघन्य बंध अन्तर्मूहूर्त होता है।

प्रश्न 2 निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि इन पाँच दर्शनावरण कर्म प्रकृतियों का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना होता हैं ?

उत्तर उक्त पाँचों (निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धि कर्म प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध 30 कोड़ा–कोड़ी सागर होता है तथा जघन्य स्थिति बंध पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 3/7 सागर होता है।

प्रश्न 3 चक्षु, अचक्षु, अवधि व केवलदर्शनावरण कर्म प्रकृतियों का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना होता है।

उत्तर चक्षु, अचक्षु, अवधि व केवलदर्शनावरण कर्म प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध 30 कोड़ा–कोड़ी सागर व जघन्य अंतर्मुहूर्त होता है।

प्रश्न 4 साता वेदनीय कर्म का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना है ?

उत्तर साता वेदनीय कर्म प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध 15 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य 12 मुहूर्त है।

प्रश्न 5 असाता वेदनीय कर्म का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना है ?

उत्तर असाता वेदनीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 30 कोड़ी–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 3/7 सागर है।

प्रश्न 6 मिथ्यात्व प्रकृति का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना है ?

उत्तर मिथ्यात्व प्रकृति का उत्कृष्ट स्थिति बंध 70 कोड़ा–कोड़ी सागर हैं तथा जघन्य पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 7/7 सागर है।

प्रश्न 7 अनंतानुबंधी–अप्रत्याख्यान–प्रत्याख्यान चतुष्क का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना है ?

उत्तर अनंतानुबंधी–अप्रत्याख्यान–प्रत्याख्यान चतुष्क (क्रोध, मान, माया, लोभ) का उत्कृष्ट स्थिति बंध 40 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 4/7 सागर है।

प्रश्न 8 संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ का जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति बंध कितना है ?

उत्तर संज्वलन क्रोध का उत्कृष्ट स्थिति बंध 40 कोड़ा–कोड़ी सागर है, जघन्य 2 माह है।

संज्वलन मान का उत्कृष्ट स्थिति बंध 40 कोड़ा–कोड़ी सागर है, जघन्य 1 माह है।

संज्वलन माया का उत्कृष्ट स्थिति बंध 40 कोड़ा–कोड़ी सागर है, जघन्य 1 पक्ष है।

संज्वलन लोभ का उत्कृष्ट स्थिति बंध 40 कोड़ा–कोड़ी सागर है, जघन्य अन्तर्मुहूर्त है।

प्रश्न 9 नो कषायों का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना है ?

उत्तर **स्त्रीवेद का उत्कृष्ट स्थिति बंध 15 कोड़ा–कोड़ी सागर है व जघन्य पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है। पुरूष वेद का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है जघन्य 8 वर्ष है।**

नपुंसक वेद का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है व जघन्य पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

हास्य रति का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है व जघन्य पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

अरति, शोक, जुगुप्सा, भय का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है व जघन्य पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

प्रश्न 10 चारों आयु कर्म का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध क्या है ?

उत्तर नरकायु व देवायु का उत्कृष्ट स्थिति बंध 33 सागर है, जघन्य 10 हजार वर्ष है। मनुष्यायु व तिर्यंचायु का उत्कृष्ट स्थिति बंध 3 पल्य है, जघन्य क्षुद्रभव प्रमाण है।

प्रश्न 11 चारों गति नामकर्म का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर (1) नरक गति नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2000/7 सागर है।

(2) तिर्यंचगति नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के अख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

(3) मनुष्यगति नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 15 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

(4) देवगति नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के संख्यातवें भाग हीन 2000/7 सागर है।

प्रश्न 12 पाँचों जाति नामकर्म का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर एकेन्द्रिय जाति तथा पंचेन्द्रिय जाति नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 18 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के

असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

प्रश्न 13 पाँचों शरीर, बंधन, संघात नामकर्म का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना है ?

उत्तर (1) औदारिक शरीर, बंधन, संघात का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

(2) वैक्रियिक शरीर, बंधन, संघात का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के संख्यातवें भाग हीन 2000/7 सागर है।

(3) आहारक शरीर, बंधन, संघात का उत्कृष्ट स्थिति बंध अन्तः कोड़ा –कोड़ी सागर है तथा जघन्य अन्तः कोड़ा–कोड़ी सागर है।

(4) तैजस शरीर, बंधन, संघात का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

(5) कार्मण शरीर बंधन, संघात का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

प्रश्न 14 छहों संस्थानों का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर **समचतुरस्त्रसंस्थान** का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध 12 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

स्वाति संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध 14 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

कुब्जक संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध 16 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

वामन संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध 18 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

हुण्डक संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

प्रश्न 15 तीनों आंगोपांग नामकर्म का जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर **औदारिक आंगोपांग** नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है। तथा जघन्य स्थिति बंध पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

वैक्रियिकांगोपांग नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 2000 कोड़ा–कोड़ी सागर है। तथा जघन्य स्थिति बंध पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

आहारकांगोपांग नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध अंतर्मुहूर्त कोड़ा–कोड़ी सागर है। तथा जघन्य अंतकोड़ा–कोड़ी है।

प्रश्न 16 छहों संहनन की उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर **वज्रवृषभनाराच संहनन** का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

व्रजनाराच संहनन का उत्कृष्ट स्थिति बंध 12 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

नाराच संहनन का उत्कृष्ट स्थिति बंध 14 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

अर्धनाराच संहनन का उत्कृष्ट स्थिति बंध 16 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

कीलक संहनन का उत्कृष्ट स्थिति बंध 18 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

असंप्राप्तासृपाटिका संहनन का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

प्रश्न 17 चार वर्णादि का जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर कृष्णादि 5 वर्ण, 2 गंध, 5 रस, 8 स्पर्श का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

प्रश्न 18 चारों आनुपूर्वियों का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर **(1) नरकगत्यानुपूर्वी** का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2000/7 सागर है।

(2) तिर्यंचगत्यानुपूर्वी का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

(3) मनुष्यगत्यानुपूर्वी का उत्कृष्ट स्थिति बंध 15 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

(4) देवगत्यानुपूर्वी का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है

तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2000/7 सागर है।

प्रश्न 19 दोनों विहायो गतियों का जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर प्रशस्तविहायोगति का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के संख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

अप्रशस्तविहायोगति का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यावें भाग हीन 2/7 सागर है।

प्रश्न 20 28 अपिण्ड प्रकृतियों का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर 1. अगुरुलघु 2. उपघात 3. परघात 4. उच्छवास 5. आतप 6. उद्योत 7. त्रस 8. स्थावर 9. बादर, इन प्रकृतियों का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यावें भाग हीन 2/7 सागर है।

10. सूक्ष्मनामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 18 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

11. पर्याप्त नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

12. अपर्याप्त नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 18 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

13. प्रत्येक शरीर नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

14. साधारण शरीर नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 18 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

15. स्थिर नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

16. अस्थिर नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

17. शुभ नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

18. अशुभ नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

19. सुभग नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

20. दुर्भग नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है

तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

21. सुस्वर नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

22. दुस्वर नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

23. आदेय नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

24. अनादेय नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

25. यशःकीर्ति नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य 8 मुहूर्त **है।**

26. अयशःकीर्ति नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

27. निर्माण नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

28. तीर्थंकर नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध अन्तः कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य भी अन्तः कोड़ा–कोड़ी है।

प्रश्न 21 दोनों गोत्र कर्मों का जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर उच्चगोत्र का उत्कृष्ट स्थिति बंध 10 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य 8 मुहूर्त है। नीचगोत्र का उत्कृष्ट स्थिति बंध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य पल्य के असंख्यातवें भाग हीन 2/7 सागर है।

प्रश्न 22 पाँचों अन्तराय कर्मों का उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बंध कितना हैं ?

उत्तर पाँचों अंतराय कर्मों का उत्कृष्ट स्थिति बंध 30 कोड़ा–कोड़ी सागर है तथा जघन्य स्थिति बंध अन्तर्मुहूर्त है।

3. कर्म आबाधा

प्रश्न 1 आबाधा किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्म बंध होने के पश्चात् जितने काल तक वह उदय या उदीरणा को प्राप्त न हो सके उतने काल को अबाधा कहते हैं।

प्रश्न 2 आबाधा के कितने भेद हैं ?

उत्तर आबाधा के मुख्य दो भेद हैं– (1) उदीरणा आबाधा (2) उदय आबाधा

प्रश्न 3 उदीरणा आबाधा किसे कहते हैं ?

उत्तर कार्माण शरीर नामकर्म के उदय से योग द्वारा आत्मा में कर्म स्वरूप से परिणमता हुआ पुद्गल द्रव्य जब तक उदीरणा रूप नही होता तब तक के काल को उदीरणा आबाधा कहते हैं।

प्रश्न 4 उदीरणा आबाधा कितने समय की होती है ?

उत्तर उदीरणा आबाधा बंधावली या अचलावली (एक आवली) काल प्रमाण की होती हैं।

प्रश्न 5 उदीरणा कीं अपेक्षा आबाधा का काल एक अचलावलीं क्यों है।

उत्तर क्योंकि जो कर्म उदीरणा रूप होता है वह बंध के पश्चात् एक आवली प्रमाण काल के व्यतीत होने पर ही उदय में आता है। अतः उदीरणा के अपेक्षा आबाधा एक आवली (अचलावली) प्रमाण है।

प्रश्न 6 अचलावली किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्म आवली प्रमाण काल पर्यंत जिस रूप से बंधे हैं उनका वैसे ही रहना अर्थात् उस आवली से उनका उदय, उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण और उदीरणा नहीं होने को अचलावली कहते हैं।

प्रश्न 7 उदीरणा किस क्रम से होतीं है ?

उत्तर जो अचलावली को छोड़कर शेष काल में उदय रूप प्रकृतियों की उदयावली से उपरितन स्थिति वाले कर्म परमाणुओं को अपकर्षण करके उदयावली में लाता है वह आवली काल में उदय होकर खिर जाता है। इस क्रम से उदीरणा होती है और जो निषेक उपरितन स्थिति में दिये हैं वे ऊपर की स्थिति के अनुसार खिरते है तथा अन्तिम आवली प्रमाण अतिस्थापनावली को छोड़कर जो कर्म परमाणु हैं वे नाना गुणहानि रूप सभी निषेकों में खिरते हैं। इस क्रम से कर्म प्रकृतियों की उदीरणा होती हैं।

प्रश्न 8 उदीरणा किस आयु की होतीं है ?

उत्तर कर्म भूमिज मनुष्य व तिर्यंचों की भुज्यमान आयु की उदीरणा होती है।

प्रश्न 9 बध्यमान आयु की उदीरणा होती है या नहीं ?

उत्तर बध्यमान आयु की उदीरणा नियम से नहीं होती हैं। उसका तो अपवर्तन घात होता है।

प्रश्न 10 उदय आबाधा किसे कहते है ?

उत्तर कार्माण शरीर नामकर्म के उदय से योग द्वारा आत्मा में कर्मस्वरूप से परिणमता हुआ पुद्गल द्रव्य जब तक उदय रूप नहीं होता तब तक के काल को उदय आबाधा कहते है।

प्रश्न 11 उदय आबाधा कितने समय की होती है ?

उत्तर एक कोड़ा–कोड़ी सागर स्थिति बंध की उदय आबाधा 100 वर्ष की होती है। बंध के समय इस उदय आबाधा काल में निषेक रचना नहीं होती किन्तु अचलावली काल के पश्चात् स्थिति अपकर्षण द्वारा इस उदय आबाधा काल में भी निषेक रचना हो जाती है। इसलिए उदीरणा की आबाधा एक आवली मात्र है।

प्रश्न 12 मिथ्यात्व की उत्कृष्ट उदय आबाधा कितनी है ?

उत्तर त्रैरासिक विधि से, प्रमाण राशि 1 कोड़ा–कोड़ी फल राशि 100 वर्ष, इच्छा राशि 70 कोड़ा–कोड़ी = 100×70 ÷ 1 = 7000 अर्थात् मिथ्यात्व की उत्कृष्ट आबाधा 7000 वर्ष की है।

प्रश्न 13 आयु बिना शेष कर्मों की उत्कृष्ट उदय आबाधा कितनी है ?

उत्तर आयु बिना शेष कर्मों की उत्कृष्ट आबाधा निम्न पंक्तियों में देखें–क्रमशः

ज्ञानावरण कर्म की उदय आबाधा 3,000 वर्ष की है।

दर्शनावरण कर्म की उदय आबाधा 3,000 वर्ष की है।

वेदनीय कर्म की उदय आबाधा 3,000 वर्ष की है।

दर्शन मोहनीय कर्म की उदय आबाधा 7,000 वर्ष की है।

चारित्र मोहनीय कर्म की उदय आबाधा 4,000 वर्ष की है।

नाम कर्म की उदय आबाधा 2,000 वर्ष की है।

गोत्र कर्म की उदय आबाधा 2,000 वर्ष की है।

अंतराय कर्म की उदय आबाधा 3,000 वर्ष की है।

प्रश्न 14 संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की जघन्य आबाधा एवं स्थिति कितनी है ?

उत्तर संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की जघन्य आबाधा अन्तर्मुहूर्त है तथा जघन्य स्थिति बंध अन्तः कोड़ा–कोड़ी सागर है।

प्रश्न 15 संज्ञी पंचेन्द्रियों की अपेक्षा असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्विन्द्रिय एवं एकेन्द्रिय जीवों की आबाधा कितनी है ?

उत्तर संज्ञी पंचेन्द्रिय की अपेक्षा असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,

द्वीन्द्रिय और एकेन्द्रिय जीवों की आबाधा संख्यात गुणी क्रमशः हीन–हीन होती गई है।

प्रश्न 16 सभी असंज्ञी जीवों की आबाधा काल का प्रमाण कितना है ?

उत्तर सभी असंज्ञी जीवों की आबाधा का प्रमाण अंतर्मुहूर्त है और अलग–अलग प्रत्येक की आबाधा भी अंतर्मुहूर्त–अंतर्मुहूर्त है। फिर भी अंतर्मुहूर्त ही है क्योंकि अंतर्मुहूर्त के अनेक भेद हैं।

प्रश्न 17 मिथ्यात्व की उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति को कौन–कौन से जीव बाँधते हैं ?

उत्तर मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति को एकेन्द्रिय जीव 1 सागर, द्वीन्द्रिय 25 सागर, त्रीन्द्रिय 50 सागर, चतुरिन्द्रिय 100 सागर, असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव 1000 सागर, तथा संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव 70 कोड़ा–कोड़ी सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति बाँधता है। तथा मिथ्यात्व की जघन्य स्थिति एकेन्द्रिय जीव अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्य के असंख्यात वें भाग कम बाँधता है तथा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्य के संख्यातवें भाग प्रमाण कम बाँधता है।

प्रश्न 18 संज्ञी पंचेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय एवं विकलत्रय जीवों की उत्कृष्ट आबाधा कितनी है ?

उत्तर संज्ञी जीवों की उत्कृष्ट आबाधा संख्यात गुणी है। असंज्ञी जीवों की व विकलत्रय की अपनी–अपनी जघन्य आबाधा से उत्कृष्ट आबाधा यद्यपि आवली के संख्यातवें भाग प्रमाण अधिक उत्कृष्ट आबाधा है तथापि वह असंज्ञी पंचेन्द्रियों से एकेन्द्रिय पर्यंत क्रम से संख्यातगुणी संख्यातगुणी हीन जानना चाहिए।

प्रश्न 19 एकेन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट आबाधा कितनी है ?

उत्तर एकेन्द्रिय जीवों की अपनी जघन्य आबाधा से आवली का संख्यातवाँ भाग अधिक, उत्कृष्ट आबाधा है।

प्रश्न 20 एकेन्द्रिय जीवों के आबाधा भेद कितने है ?

उत्तर एकेन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट आबाधा के प्रमाण से जघन्य आबाधा का प्रमाण घटाने से जो प्रमाण बचे उसमें एक और मिलाने से जो प्रमाण होता है उतनी संख्या प्रमाण एकेन्द्रिय जीवों की आबाधा के भेद है।

प्रश्न 21 द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी–पंचेन्द्रिय और संज्ञी–पंचेन्द्रिय की आबाधा के प्रमाणों को निकालने की क्या विधि है ?

उत्तर द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी–पंचेन्द्रिय तथा संज्ञी–पंचेन्द्रिय

जीवों के अपने–अपने उत्कृष्ट आबाधा के प्रमाणों में से अपनी–अपनी जघन्य आबाधा के प्रमाण को घटाने पर जो संख्या आये उसमें एक मिलाने से क्रमशः आबाधा के भेद निकल आते है।

प्रश्न 22 आबाधा के भेदों के निकालने का क्या सूत्र है ?

उत्तर **"आदी अन्ते सुद्धे वड्ढिहिदे रूव संजुदे ठाणा...."** – आदि को अंत में से घटाकर उसमें वृद्धि का भाग देकर एक और मिलाने पर स्थानों का प्रमाण निकल आता है। अर्थात् आदि=जघन्य आबाधा को अन्त=उत्कृष्ट आबाधा में से घटाकर उसमें वृद्धि एक का भाग देने पर जो राशि आये उसमें एक और मिलाने से आबाधा के भेद रूप स्थानों का प्रमाण निकल आता है।

प्रश्न 23 आबाधा काण्डक किसे कहते है ?

उत्तर एकेन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट स्थिति को उत्कृष्ट आबाधा से भाग देने पर जो प्रमाण आवे उसे आबाधा काण्डक कहते है। माना कि उत्कृष्ट आबाधा का प्रमाण 16 है और उत्कृष्ट स्थिति का प्रमाण 64, अतः उत्कृष्ट आबाधा का प्रमाण 16 का भाग उत्कृष्ट स्थिति 64 में भाग देने से आबाधा काण्डक का प्रमाण 4 निकल आता है।
$(64 \div 16 = 4)$

प्रश्न 24 जघन्य स्थिति लाने की विधि समझाइये ?

उत्तर अपने–अपने आबाधा काण्डक के प्रमाण से अपने–अपने आबाधा के भेदों को गुणा करने पर जो प्रमाण प्राप्त हो उसमें से एक घटाकर जितना प्रमाण आवे, उतना अपनी–अपनी उत्कृष्ट स्थिति में से घटाने पर जो लब्ध आए वह अपनी–अपनी जघन्य स्थिति का प्रमाण है।

प्रश्न 25 आयाम किसे कहते है ?

उत्तर आयाम–लम्बाई अर्थात् स्थिति बंध में जो काल का प्रमाण है उसे आयाम कहते है।

प्रश्न 26 श्लाका किसे कहते है ?

उत्तर अनेक संख्या में विभाजित करने के लिये पारस्परिक अनुपात की कल्पना को श्लाका कहते है।

प्रश्न 27 अन्तः कोड़ा–कोड़ी सागर स्थिति की उदय आबाधा कितनी है ?

उत्तर अन्तः कोड़ा–कोड़ी सागर स्थिति की उदय आबाधा अंतर्मुहूर्त है।

प्रश्न 28 सर्व जघन्य स्थितियों की उदय आबाधा कितनी है ?

उत्तर सर्व जघन्य स्थितियों की उदय आबाधा, अन्तः कोड़ा–कोड़ी सागर की आबाधा (अंतर्मुहूर्त) से संख्यातगुणी हीन है।

प्रश्न 29 एक सागर स्थिति की आबाधा कितनी है ?

उत्तर एक सागर स्थिति की आबाधा संख्यात उच्छ्वास है।

प्रश्न 30 आयु कर्म की उत्कृष्ट एवं जघन्य आबाधा कितनी है ?

उत्तर आयु कर्म की उत्कृष्ट आबाधा कोटि पूर्व वर्ष के तीसरे भाग प्रमाण है तथा जघन्य आबाधा असंक्षेपद्धा काल प्रमाण है और इसका काल आवली के संख्यातवें भाग प्रमाण है। अतः आयु कर्म की आबाधा इसी क्रम से है अन्य कर्मों के सदृश नहीं।

प्रश्न 31 असंख्यात वर्ष की जितनी आयु है उसके त्रिभाग प्रमाण आबाधा क्यों नहीं होती है ?

उत्तर असंख्यात वर्ष की आयु वाले देव नारकी और भोगभूमिज जीव 6 माह आयु शेष रहने पर ही नवीन आयु का बंध करते हैं। अतः उनकी त्रिभाग प्रमाण आबाधा नहीं होती है। कर्मभूमिज की उत्कृष्ट आयु कोटि पूर्व वर्ष अर्थात् संख्यात वर्ष है अतः उसी का त्रिभाग ही उत्कृष्ट आबाधा काल कहा है।

प्रश्न 32 त्रिभाग में आयु बंध का क्रमिक नियम क्या है ?

उत्तर संख्यात वर्ष की आयु वाले जीव अपनी आयु के दो त्रिभाग बीत जाने पर ही आठ अपकर्ष कालों में से किसी एक अपकर्ष काल में नवीन आयु का बंध करते हैं। जैसे– माना कि किसी की आयु 90 वर्ष की है तो 90 का त्रिभाग अर्थात् 60 वर्ष बीतने के पश्चात् प्रथम अंतर्मुहूर्त पहला अपकर्ष है। इसमें आयु का बंध होता है। यदि इसमें आयु का बंध नही हुआ तो शेष रहें 30 वर्ष का त्रिभाग अर्थात् बीस वर्ष के पश्चात् प्रथम अंतर्मुहूर्त द्वितीय अपकर्ष हुआ इसमें आयु का बंध होता है। यदि इसमें भी आयु का बंध नहीं हुआ तो शेष के इसी क्रमानुसार आठ बार त्रिभाग करते जाना चाहिए फिर भी यदि आयु का बंध नहीं हुआ तो फिर असंक्षेपद्धा काल में आयु का बंध नियम से होगा।

प्रश्न 33 यदि आठों अपकर्ष कालों में आयु का बंध नहीं हुआ तो ?

उत्तर यदि आठों अपकर्ष कालों में आयु का बंध नहीं हुआ तो अंतर्मुहूर्त आयु शेष रहने पर उत्तर भव की आयु को अंतर्मुहूर्त काल के समय प्रबद्ध में बांधकर निष्ठापन करता है तथा असंक्षेपद्धा काल पर्यंत विश्राम कर मरण करता है।

4. दश – करण

प्रश्न 1 करण किसे कहते है ?

उत्तर कर्मों के कारणभूत परिणामों को करण कहते है।

प्रश्न 2 करण कितने होते हैं ?

उत्तर करण 10 होते है–

(1) बन्ध (2) उत्कर्षण (3) संक्रमण (4) अपकर्षण (5) उदीरणा (6) सत्त्व (7) उदय (8) उपशम (9) निधत्ति (10) निकाचित।

प्रश्न 3 बन्ध किसे कहते है।

उत्तर पुद्गल द्रव्यों का कर्म रूप होकर आत्म प्रदेशों के साथ संश्लेश संबंध होना बंध है।

प्रश्न 4 उत्कर्षण किसे कहते है ?

उत्तर कर्मों का जो स्थिति व अनुभाग पूर्व में था उसमें वृद्धि का होना उत्कर्षण है।

प्रश्न 5 संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर पूर्वबद्ध प्रकृति का अन्य प्रकृति रूप परिणमन होना अर्थात् उस प्रकृति के परमाणुओं का अन्य प्रकृति रूप होना संक्रमण है।

प्रश्न 6 कर्म किसे कहते है ?

उत्तर जो पुद्गल स्कन्ध मिथ्यात्वादि कार्य के उत्पन्न कराने में समर्थ हैं उसे कर्म कहते हैं।

प्रश्न 7 कर्म संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर अपनी कर्म रूप अवस्था का त्याग किये बिना अन्य स्वभाव रूप से संक्रमण करना कर्म संक्रमण है।

प्रश्न 8 कर्म (प्रकृति) संक्रमण के कितने भेद हैं ?

उत्तर द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा एक प्रकार का है तथापि पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा से वह प्रकृति संक्रमण आदि के भेद से चार प्रकार का है।

प्रश्न 9 कर्म संक्रमण के चार भेद कौन–कौन से है ?

उत्तर कर्म संक्रमण के चार भेद हैं–

(1) प्रकृति संक्रमण, (2) स्थिति संक्रमण

(3) अनुभाग संक्रमण (4) प्रदेश संक्रमण।

प्रश्न 10 प्रकृति संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर एक प्रकृति का दूसरी प्रकृतियों में संक्रमण होना प्रकृति संक्रमण है। जैसे क्रोध का मानादिक में संक्रमण होना प्रकृति संक्रमण है।

प्रश्न 11 स्थिति संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर जो स्थिति अपकर्षित, उत्कर्षित और अन्य प्रकृति रूप से संक्रमित होती है वह स्थिति संक्रमण है।

प्रश्न 12 अनुभाग संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर अनुभाग का अन्य रूप होना, अनुभाग संक्रमण है।

प्रश्न 13 अनुभाग संक्रमण के भेद कितने हैं ?

उत्तर (1) अपकर्षित हुआ अनुभाग, (2) उत्कर्षित हुआ अनुभाग, (3) अन्य प्रकृति रूप हुआ अनुभाग के भेद से अनुभाग संक्रमण के तीन भेद हैं।

प्रश्न 14 तीनों अनुभागों को स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर (1) जिन प्रकृतियों का अनुभाग घटता हुआ होता है ऐसे द्रव्य के संक्रमण को अपकर्षित अनुभाग संक्रमण कहते हैं।

(2) जिन प्रकृतियों का अनुभाग बढ़ता हुआ है ऐसे द्रव्य के संक्रमण को उत्कर्षित अनुभाग संक्रमण कहते हैं।

(3) एक प्रकृति का अन्य प्रकृति रूप अनुभाग को अन्य प्रकृति रूप अनुभाग संक्रमण कहते हैं।

प्रश्न 15 प्रदेश संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर जो प्रदेशाग्र जिस प्रकृति से अन्य प्रकृति की ओर ले जाया जाता है उसे प्रदेश संक्रमण कहते हैं। इसमें उत्कर्षण, अपकर्षण आदि नहीं होते हैं उसका पर प्रकृति रूप संक्रमण होता है।

प्रश्न 16 क्या स्वजातीय प्रकृतियों का ही संक्रमण होता है ?

उत्तर हाँ! स्वजातीय प्रकृतियों का ही संक्रमण होता है।

प्रश्न 17 स्वजातीय प्रकृतियों का संक्रमण कब होता है ?

उत्तर नवीन बंध होने पर ही बँधी प्रकृति में अन्य स्वजाति प्रकृतियों का संक्रमण होता है। संक्रमण भी एक प्रकार का बंध है किन्तु प्रकृति बंध के बाद ही यह संभव होता है।

प्रश्न 18 अपकर्षण किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्मों के स्थिति –अनुभाग का कम होना अपकर्षण या अपवर्तन हैं।

प्रश्न 19 अपकर्षण के कितने भेद हैं ?

उत्तर अपकर्षण के मुख्य दो भेद हैं– (1) अव्याघात अपकर्षण, (2) व्याघात अपकर्षण

प्रश्न 20 अव्याघात अपकर्षण किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस अपकर्षण में (जहाँ) स्थिति काण्डक घात नहीं होता है उसे अव्याघात अपकर्षण कहते हैं।

उत्तर जिन कर्मों का सत्त्व होता है उन्हीं कर्मों का वेदन होता है।

प्रश्न 39 उदय किसे कहते हैं ?

उत्तर जीव से संबंध हुए वे ही कर्म स्कंध फल देने के समय में 'उदय' इस संज्ञा को प्राप्त होते हैं।

प्रश्न 40 उदीरणा किसे कहते हैं ?

उत्तर (1) कर्म बंधन के पश्चात् आवलीकाल (बंधावली) व्यतीत होने पर अपकर्षण कर जब उदय संक्षुभ्यमान किया (दिया) जाता सो उदीरणा है।

(2) नहीं पके हुए कर्मों के पकाने का नाम उदीरणा है।

(3) उदय के लिए अपक्व कर्मों का पाचन करना (पचाना) उदीरणा है।

प्रश्न 41 उपशमना किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्मों के उपशम को उपशमना कहते हैं।

प्रश्न 42 उपशमना के कितने भेद हैं ?

उत्तर उपशमना के मुख्य दो भेद हैं – (1) प्रशस्तोपशमना
(2) अप्रशस्तोपशमना

प्रश्न 43 प्रशस्तोपशमना किसे कहते हैं ?

उत्तर अधःकरण, अपूर्वकरण व अनिवृत्तिकरण परिणामों के द्वारा जो मोहनीय कर्म की उपशमना होती है वह प्रशस्तोपशमना है।

प्रश्न 44 अप्रशस्तोपशमना किसे कहते हैं ?

उत्तर बन्ध के समय सभी कर्मों के कुछ प्रदेशों में अप्रशस्तोपशमना होती है। कितने ही कर्म परमाणुओं का बहिरंग, अन्तरंग कारणवश उदीरणा द्वारा उदय में नहीं आने को अप्रशस्तोपशमना कहते हैं।

प्रश्न 45 निधत्तिकरण किसे कहते है ?

उत्तर जो कर्म उदय और संक्रमण के लिये तो योग्य नहीं हैं किन्तु जो अपकर्षण और उत्कर्षण के लिए शक्य हैं उसे निधत्तिकरण कहते हैं।

प्रश्न 46 निकाचित करण किसे कहते हैं ?

उत्तर जो कर्म अपकर्षण, उत्कर्षण, संक्रमण और उदय के योग्य नहीं हो उसे निकाचित करण कहते हैं।

प्रश्न 47 किस–किस कर्मों में कितने–कितने करण होते हैं ?

उत्तर चारों आयु कर्म में संक्रमण के बिना 9 करण होते हैं। शेष बंध योग्य सर्व कर्मों में दश करण होते हैं।

प्रश्न 48 किस–किस गुणस्थानों में कितने–कितने करण होते हैं ?

उत्तर मिथ्यात्व गुणस्थान से अपूर्वकरण गुणस्थान तक दशों करण पाये जाते हैं। अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान में उपशांत, निधत्ति, निकाचित के बिना सात करण पाये जाते हैं क्योंकि अनिवृत्तिकरण परिणामों के द्वारा उपशांत, निधत्ति और निकाचित करण टूट जाता है।

संयोग केवली गुणस्थान में संक्रमण, उपशांत, निधत्ति और निकाचित के बिना छः करण होते हैं। अयोग केवली गुणस्थान में सत्त्व और उदय रूप दो ही करण है।

प्रश्न 49 बंध और उत्कर्षण कब होता है ?

उत्तर जिस प्रकृति का जब बंध होता है तभी बंध और उत्कर्षण होता है।

प्रश्न 50 संक्रमण कब होता है ?

उत्तर अपनी–अपनी स्वजातीय प्रकृतियों के बंध के समय में संक्रमण करण होता है।

प्रश्न 51 किस–किस गुणस्थान की प्रकृतियों का कौन–कौन सा संक्रमण होता है?

उत्तर 85 प्रकृतियों (14 वें गुणस्थान वाली) का 13 वें गुणस्थान के अंत तक अपकर्षण करण होता है। 17 प्रकृतियों (12वें गुणस्थान में सत्त्व व्युछिन्न 16 प्रकृतियों का तथा 10 वें गुणस्थान में सूक्ष्म लोभ की व्युच्छित्ति होती है।) गुणस्थान में क्षयदेश पर्यंत अपकर्षण करण होता है।

प्रश्न 52 क्षयदेश किसे कहते हैं ?

उत्तर क्षय होने के स्थान को अर्थात् जिस स्थान में क्षय हुआ हो उसको क्षयदेश कहते हैं।

प्रश्न 53 क्षयदेश प्रकृतियों के कितने प्रकार हैं ?

उत्तर क्षयदेश स्वमुखोदय और परमुखोदय के भेद से उसके दो भेद हैं।

प्रश्न 54 स्वमुखोदयी क्षयदेश का क्या अर्थ है ?

उत्तर स्वमुखोदयी प्रकृतियों का काल एक समय से अधिक एक आवली प्रमाण है वही क्षयदेश है।

प्रश्न 55 परमुखोदयी क्षयदेश का क्या अर्थ है ?

उत्तर परमुखोदयी प्रकृतियों का काल अंत काण्डक की अंतिम फालि को परमुखोदयी क्षयदेश कहते हैं।

5. संक्रमण के प्रकार

प्रश्न 1 संक्रमण कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर संक्रमण के उद्वेलन, विंध्यात, अधःप्रवृत्तकरण, गुण संक्रमण और सर्व संक्रमण इस तरह संक्रमण पाँच प्रकार का होता है।

प्रश्न 2 उद्वेलन संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर अधःकरण आदि तीन करण बिना कर्म परमाणुओं का अन्य प्रकृति रूप हो जाना, जैसे रस्सी को जिस प्रकार घुमाकर बल दिया था पीछे उसे उल्टा घुमाने से वह बल निकल जाता है, उसी प्रकार जिन प्रकृति का बंध किया था, पीछे परिणाम विशेष (अधःकरणादि के बिना) भाग–हार के द्वारा अपकर्षण करके उसके अन्य प्रकृति रूप परिणमा करके उसका नाश कर दिया अर्थात् फल उदय में नहीं आने दिया उसे उद्वेलन संक्रमण कहते हैं।

विशेषताएँ :

(1) इसका भागहार अंगुल के असंख्यातवें भाग है अर्थात् सबसे अधिक है, या प्रत्येक समय बहुत कम द्रव्य इसके द्वारा परिणमाया जाना संभव है, क्योंकि बिना परिणामों रूप प्रयत्न विशेष के धीरे–धीरे कार्य का होना संभव है।

(2) उद्वेलन योग्य प्रकृति उस समय नहीं बँधती और न ही उसके बाँधने की अन्य जीव में योग्यता होती है क्योंकि उसके बंध की योग्यता मिथ्यात्व गुणस्थान में ही होती है।

(3) यह (उद्वेलन योग्य प्रकृतियाँ) काण्डक रूप होती है। अर्थात् प्रथम अंतर्मुहूर्त काल द्वारा विशेष चयहीन क्रम से तथा द्वितीय अन्तर्मुहूर्त में उससे दुगने चय क्रम से होती है।

(4) उद्वेलन प्रकृति अधःप्रवृत्तपूर्वक ही होती है।

(5) उद्वेलन संक्रमण उपान्त्य काण्डक पर्यंत ही होती है।

(6) यह उद्वेलित प्रक्रिया प्रकृति के सर्वहीन निषेक के परिणमाने में होती है थोड़े भाग में नहीं।

(7) उद्वेलन संक्रमण के प्रत्येक काण्डक, पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण होता है।

प्रश्न 3 केवल उद्वेलन योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर केवल उद्वेलन योग्य प्रकृतियाँ तेरह है–

यथा– (1) आहारक शरीर, (2) आहारक आंगोपांग, (3) वैक्रियिक शरीर, (4) वैक्रियिक आंगोपांग, (5) नरक गति, (6) नरक गत्यानुपूर्वी, (7) मनुष्य गति, (8) मनुष्यगत्यानुपूर्वी, (9) देवगति, (10) देवगत्यानुपूर्वी, (11) सम्यक्त्व प्रकृति, (12) मिश्र प्रकृति, (13) उच्च गोत्र।

प्रश्न 4 विंध्यात संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर मंद विशुद्धता वाले जीव की स्थिति , अनुभाग के घटने रूप भूतकालीन स्थिति काण्डक और अनुभाग काण्डक तथा गुणश्रेणी आदि परिणामों में प्रवृत्ति होना विंध्यात संक्रमण है।

विशेषताएँ :

(1) अपकर्षण विधान में बताये गये स्थिति व अनुभाग काण्डक गुण श्रेणी रूप परिणामों में प्रवृत्त होना विंध्यात संक्रमण है।

(2) इसका भागहार भी यद्यपि अंगुल के असंख्यातवें भाग है परन्तु वह उद्वेलना के भागहार से असंख्यात गुणहीन है अतः इसके द्वारा प्रति समय उठाया गया द्रव्य बहुत अधिक है।

(3) मिथ्यात्व व मिश्र मोह इन दो प्रकृतियों को जब सम्यकत्व प्रकृति रूप से परिणमाता है तब यह संक्रमण होता है।

(4) वेदक सम्यक्त्व वाले को तो सर्व ही अपनी स्थिति काल में वहां तक होता रहता है जब तक कि क्षपण प्रारम्भ करता हुआ अधःप्रवृत्त परिणाम का अंतिम समय प्राप्त नहीं होता है।

(5) उपशम सम्यक्त्व भी अपने सर्व काल में उसी प्रकार होता रहता है परन्तु यहाँ प्रथम अंतर्मुहूर्त में गुण संक्रमण करता है पश्चात् उसका काल समाप्त होने के पश्चात् विंध्यात संक्रमण प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 5 केवल विंध्यात संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ होतीं है ?

उत्तर केवल विध्यात संक्रमण के योग्य 67 प्रकृतियाँ हैं।

सम्यक्त्व प्रकृति बिना 12 उद्वेलन प्रकृतियों, स्त्यानगृद्धि, निद्रा–निद्रा, प्रचला–प्रचला, अनन्तानुबंधी 4, अप्रत्याख्यान 4, प्रत्याख्यान 4, स्त्रीवेद, नपुंसक वेद, अरति, शोक, तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रियादि 4 जाति, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, असातावेदनीय, अप्रशस्तविहायोगति, वज्रवृषभनाराच संहनन बिना 5 संहनन, समचतुरस्रसंस्थान बिना 5 संस्थान, नीच गोत्र, अपर्याप्त, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति, औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग तीर्थंकर और मिथ्यात्व, ये सर्व 67 प्रकृतियाँ विध्यातसंक्रमण की है।

प्रश्न 6 अधः प्रवृत्तकरण संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर सात मूल प्रकृतियों का अपने–अपने बंध के साथ, संभवती यथायोग्य प्रकृतियों में (उनके बंध होते समय ही) परमाणुओं का प्रदेश संक्रमण होना अधः प्रवृत्त है।

विशेषताएँ :

(1) बंध काल में या उस प्रकृति की बंध की योग्यता रखने पर उस ही

गुणस्थान में होता है जिसमें कि वह प्रकृति बंध से व्युच्छिन्न नहीं हुई है।

(2) थोड़े द्रव्य का होता है सर्व द्रव्य का नहीं, क्योंकि इसके पीछे उद्वेलन या गुण या विध्यात संक्रमण प्रारम्भ हो जाते हैं।

(3) क्रोध के प्रत्याख्यानादि स्वजाति भेदों में अथवा मानादि विजातियों में परिणमाता है।

(4) यह नियम से फालि रूप होता है।

(5) यह अंतर्मुहूर्त पर्यंत ही होता है।

(6) काण्डक रूप संक्रमण और फालि रूप संक्रमण में इतना भेद है कि फालि रूप में तो अन्तर्मुहूर्त पर्यंत बराबर भागहार हानि क्रम से उठा–उठाकर साथ–साथ संक्रमाता है और काण्डक रूप में वर्तमान समय से लेकर एक–एक अंतर्मुहूर्त काल बीतने पर भागहार क्रम से इकट्‌ठा द्रव्य उठाता है अर्थात् संक्रमण करने के लिए निश्चित करता है।

(7) एक अंतर्मुहूर्त तक संक्रमाने के लिए जो द्रव्य निश्चित किया उसे काण्डक कहते हैं।

(8) उस द्रव्य को अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत चयहानि क्रम से पाता है उसके समाप्त होने पर अगले अंतर्मुहूर्त के लिए अगला काण्डक उठाता है।

प्रश्न 7 केवल अधःप्रवृत्त योग्य प्रकृतियाँ कितनी और कौन–कौन सी है ?

उत्तर पाँच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, पाँच अन्तराय, साता वेदनीय, संज्वलन लोभ, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस शरीर, कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्णादि चार, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्‌वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक शरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति और निर्माण इन 39 प्रकृतियों का केवल अधःप्रवृत्त संक्रमण ही होता है।

प्रश्न 8 गुण संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर जहाँ पर प्रति समय असंख्यात गुणित श्रेणी क्रम से जो परमाणु प्रदेश अन्य प्रकृति रूप परिणमते हैं उसे गुण संक्रमण कहते हैं।

विशेषताएँ :

(1) गुण संक्रमण का भागहार यद्यपि पल्य का असंख्यात भाग है परन्तु अधःप्रवृत्त से असंख्यात गुणहीन है। इसलिए प्रति समय ग्रहण किया गया द्रव्य बहुत ही अधिक होता है। उपान्त्य काण्डक पर्यंत विशेष हानिक्रम से उठाता हुआ चलता है (यहाँ तक तो उद्वेलन संक्रमण हैं) परन्तु काण्डक की अन्तिम फालि पर्यंत गुण श्रेणी रूप से उठाता है।

(2) जिन प्रकृतियों का बंध हो रहा है उसका गुण संक्रमण नहीं हो सकता है क्योंकि गुण संक्रमण अबंध रूप प्रकृतियों का होता है। और स्वजाति में ही होता है।

(3) अपूर्वकरण के प्रथम समय में गुण संक्रमण नहीं होता।

(4) अनंतानुबंधी का गुण संक्रमण विसंयोजना कहलाता है।

प्रश्न 9 गुण संक्रमण किस–किस गुणस्थान में होता है ?

उत्तर बंध रहित अप्रशस्त प्रकृतियों का गुण संक्रमण अप्रमत्त से उपशान्त कषाय पर्यंत गुण स्थानों में होता है।

प्रश्न 10 केवल गुण संक्रमण योग्य प्रकृतियाँ कितनी हैं ?

उत्तर केवल गुण संक्रमण योग्य प्रकृतियाँ 75 है। यथा :– केवल अधःकरण योग्य 39 प्रकृतियाँ तथा औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, तीर्थंकर, वज्रवृषभनाराच संहनन, पुरुषवेद, संज्वलन क्रोधादि 3, इन 47 प्रकृतियों के 122 में से कम करने पर शेष 75 प्रकृतियों का गुण संक्रमण होता है।

प्रश्न 11 सर्व संक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति के पूरण काल में और मिथ्यात्व के क्षय करने में अपूर्वकरण परिणाम के द्वारा मिथ्यात्व के अंतिम काण्डक की द्विचरमफालि पर्यंत गुण संक्रमण और अंतिम फालि में सर्व संक्रमण होता है।

विशेष :– अन्त की फालि में शेष बचे सर्व प्रदेशों का अन्य प्रकृति रूप होना सर्व संक्रमण है क्योंकि इसका भागहार एक है।

प्रश्न 12 फालि एवं काण्डक किसे कहते हैं ?

उत्तर एक समय में संक्रमण होने वाले प्रदेश पुंज को फालि कहते हैं। तथा– समय समूह में संक्रमण होने को काण्डक कहते हैं।

प्रश्न 13 केवल सर्व संक्रमण के योग्य कितनी व कौन–कौन सी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर केवल सर्व संक्रमण योग्य कुल 52 प्रकृतियाँ है यथा– तिर्यंगेकादश– (तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय जाति, द्वीन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रिय जाति, चतुरिन्द्रिय जाति, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म , साधारण)।

उद्वेलन की 13 (आहारक शरीर, आहारकांगोपांग, सम्यक्त्व, सम्यक्त्वमिथ्यात्व, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिकांगोपांग, उच्चगोत्र, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, नरक गति, नरकगत्यानुपूर्वी)

मोहनीय की 25 प्रकृतियाँ (संज्वलन लोभ, सम्यक्त्व प्र. और सम्यक्त्वमिथ्यात्व के बिना शेष सभी)

3 महानिद्रा (निद्रा–निद्रा, प्रचला–प्रचला, स्त्यानगृद्धि) इस प्रकार 11+13+25+3 = 52 प्रकृतियाँ मात्र सर्व संक्रमण योग्य हैं।

प्रश्न 14 ऐसी कितनी प्रकृतियाँ है जिनमें अधः प्रवृत्त व विंध्यात संक्रमण पाया जाता है ?

उत्तर औदारिक शरीर, औदारिक आंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन, तीर्थंकर प्रकृति इन चारों में विंध्यात संक्रमण और अधःप्रवृत्तः संक्रमण पाये जाते हैं।

प्रश्न 15 अधःप्रवृत्त संक्रमण और सर्व संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर निद्रा, प्रचला, अशुभ वर्णादिक (वर्ण, गंध, रस, स्पर्श) और उपघात इन सात प्रकृतियों के गुण संक्रमण और अधः प्रवृत्तः संक्रमण पाये जाते हैं।

प्रश्न 16 अधः प्रवृत्त संक्रमण और सर्व संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ हैं ?

उत्तर संज्वलन क्रोध, मान, माया तथा पुरुषवेद इन चारों में अधः प्रवृत्त और सर्व संक्रमण ये दो संक्रमण पाये जाते हैं।

प्रश्न 17 अधः प्रवृत्त संक्रमण, विंध्यात संक्रमण और गुण संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर असाता वेदनीय, अप्रशस्त विहायोगति, वज्रवृषभनाराच संहनन के बिना पाँच संहनन, समचतुरस्त्रसंस्थान के बिना पांच संस्थान, नीच गोत्र, अपर्याप्त, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशः कीर्ति इस प्रकार 20 प्रकृतियों के विंध्यात संक्रमण, अधःप्रवृत्त संक्रमण और गुण संक्रमण ये तीन संक्रमण पाये जाते हैं।

प्रश्न 18 अधःप्रवृत्तकरण, गुण और सर्व संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर हास्य, रति, भय और जुगुप्सा इन चार प्रकृतियों में अधःप्रवृत्त, गुण और सर्व संक्रमण ये तीन संक्रमण पाये जाते हैं।

प्रश्न 19 विंध्यात, गुण और सर्व संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर मात्र मिथ्वात्व एक प्रकृति में विंध्यात, गुण और सर्व संक्रमण ये तीनों संक्रमण पाये जाते हैं।

प्रश्न 20 अधःप्रवृत्त, विंध्यात, गुण संक्रमण और सर्व संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर स्त्यानगृद्धि, निद्रा–निद्रा, प्रचला–प्रचला, अनंतानुबंधी 4, अप्रत्याख्यान 4, प्रत्याख्यान 4, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, अरति, शोक, तिर्यंच गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय जाति, द्वीन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रिय जाति, , चतुरिन्द्रिय जाति, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, इन 30 प्रकृतियों में उद्वेलन के बिना चारों संक्रमण पाये जाते हैं।

प्रश्न 21 अधःप्रवृत्तकरण, गुण, उद्वेलन और सर्व संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर मात्र सम्यक्त्व प्रकृति का अधःप्रवृत्तकरण, गुण, उद्वेलन और सर्व ये चारों संक्रमण होते हैं।

प्रश्न 22 पाँचों संक्रमण के योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर आहारक शरीर, आहारक आंगोपांग, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, नरक गति, नरकगत्यानुपूर्वी, मनुष्य गति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, देव गति, देवगत्यानुपूर्वी, मिश्र प्रकृति और उच्च गोत्र इन बारह प्रकृतियों के सभी संक्रमण होते हैं।

प्रश्न 23 अधःप्रवृत्तकरण किस समय होता है ?

उत्तर बंध होने पर अधः प्रवृत्तकरण संक्रमण होता हैं। दर्शन मोह के बिना शेष सभी का बंध होने पर ही संक्रमण होता है।

प्रश्न 24 अधः प्रवृत्तकरण संक्रमण को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर जहाँ जिन प्रकृतियों का बंध संभव है वहाँ उन प्रकृतियों के बंध होने पर और उसके न होने पर भी अधः प्रवृत्तकरण संक्रमण होता है। यह नियम बंध प्रकृतियों के लिए है। अबंध प्रकृतियों के लिए नहीं।

प्रश्न 25 अबंध प्रकृतियों के लिए उक्त नियम क्यों नहीं है ?

उत्तर क्योंकि सम्यक्त्व और सम्यक्मिथ्यात्व इन दो अबंध प्रकृतियों में भी अधः प्रवृत्तकरण संक्रमण पाया जाता है।

प्रश्न 26 क्या मूल प्रकृतियों का भी संक्रमण होता है ?

उत्तर नहीं! मूल प्रकृतियों का परस्पर में संक्रमण नहीं होता है अर्थात् ज्ञानावरणी कभी दर्शनावरणी रूप नहीं होती किन्तु उत्तर प्रकृतियों में ही संक्रमण होता है।

प्रश्न 27 क्या सभी उत्तर प्रकृतियों में भी संक्रमण होता है ?

उत्तर नहीं, सभी उत्तर प्रकृतियों में भी संक्रमण नहीं होता है। जैसे– दर्शन मोहनीय, चारित्र मोहनीय में संक्रमित नहीं होती। चारों आयु भी परस्पर में संक्रमित नहीं होती।

प्रश्न 28 कषायों का नोकषायों में क्या संक्रमण हो सकता है ? यदि हाँ तो क्यों ?

उत्तर कषाय और नोकषाय का परस्पर में संक्रमण हो सकता है क्योंकि दोनों में प्रत्यासक्ति (समीपता) पायी जाती है।

प्रश्न 29 सोलह कषायों का नोकषाय में कब तक संक्रमण नहीं होता ?

उत्तर सोलह कषायों की उत्कृष्ट स्थिति का अचलावली काल तक नोकषाय में संक्रमण नहीं होता है।

प्रश्न 30 जिन कर्म प्रकृतियों का संक्रमण हुआ है उनका कितने समय तक कैसा अवस्थान रहता है ?

उत्तर जिन कर्म प्रकृतियों का संक्रमण (अथवा उत्कर्षण) हुआ है। वे आवली मात्र काल तक अवस्थित अर्थात् निंरतर परिणाम के बिना जिस प्रकार जहाँ निक्षिप्त हैं, उसी प्रकार ही वहाँ निश्चल भाव से रहते हैं। इसके पश्चात् उक्त कर्म प्रदेश (प्रकृति) वृद्धि, हानि एवं अवस्थानादि क्रियाओं से भजनीय है।

6. बंध - अबंध - बंध व्युच्छित्ति

प्रश्न 1 बंध किसे कहते हैं ?

उत्तर पौद्‌गलिक मूल व उत्तरकर्मप्रकृतियों का संश्लेष होना बंध है।

प्रश्न 2 संसारी जीव कर्म–नोकर्म को किस तरह से ग्रहण करते हैं इसे दृष्टांत सहित समझाइये ?

उत्तर संसारी जीव योग से युक्त औदारिक आदि शरीर नामकर्म के उदय से योग सहित होकर कर्म और नोकर्म को सभी ओर से प्रति समय ग्रहण करता है। जैसे– अग्नि से संतप्त लोहे का गोला जल में ड़ालने से वह चारों तरफ से जल ग्रहण करता है उसी तरह से संसारी जीव चारों ओर से कर्म नोकर्म को ग्रहण करता है।

प्रश्न 3 एक समय में कितने पुद्‌गल परमाणुओं का आस्रव–बंध होता है ?

उत्तर प्रत्येक समय में संसारी जीव समस्त सिद्धों के अनंतवें भाग तथा समस्त अभव्य जीवों से अनन्तगुणे कर्मों का आस्रव–बंध करते हैं।

प्रश्न 4 बंध योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर बंध योग्य 120 प्रकृतियाँ है।

प्रश्न 5 बंध योग्य 120 प्रकृतियाँ कौन–कौन सी हैं ?

उत्तर ज्ञानावरणी की 5, दर्शनावरणी की 9, वेदनीय 2, मोहनीय की 26 (क्योंकि सम्यक्त्व प्रकृति और सम्यक्त्व मिथ्यात्व प्रकृति का बंध नहीं होता है) आयु 4, नाम कर्म 67, क्योंकि 5 शरीर में ही 5 संघात और 5 बंधन शामिल होने से 10 घटी तथा स्पर्शादि 4 में ही इनके उत्तर भेद समाविष्ट हो जाते हैं अतः 16 प्रकृतियाँ घटी इस प्रकार 93 में से (16+10) = 26 प्रकृतियाँ घटाने पर नामकर्म की शेष रही कुल 67 प्रकृतियाँ ही बंध योग्य होती है। गोत्र कर्म की 2, अन्तराय कर्म की 5 इस प्रकार कुल (5+9+2+26+4+67+2+5) = 120 प्रकृतियाँ बंध योग्य हैं।

प्रश्न 6 किस–किस गुणस्थान में किन–किन कर्मों का बंध होता है ?

उत्तर 1, 2, 4, 5, 6, 7 गुणस्थान में 7 अथवा 8 कर्मों का बंध होता है। 3, 8, 9 वें गुणस्थान में आयु कर्म के बिना 7 कर्म का बंध होता है। 10 वें गुणस्थान में आयु और मोह के बिना 6 कर्म का बंध होता है। 11, 12, 13 वें गुणस्थानों में मात्र वेदनीय कर्म का बंध होता है।

14वें गुणस्थान में किसी भी कर्म का बंध नही होता है।

प्रश्न 7 अबंध किसे कहते हैं ?

उत्तर जिन प्रकृतियों का बंध नहीं होता है उन्हें अबंध कहते हैं।

प्रश्न 8 बंध व्युच्छिंत्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर बंध के बिछुड़ने को बंध व्युच्छित्ति कहते हैं। अर्थात् जिस स्थान में जिस

प्रकृति की बंध व्युच्छित्ति होती है वहाँ तक तो उस प्रकृति का बंध होता है किन्तु आगे के गुणस्थानों में उस प्रकृति के बंधाभाव को बंध व्युच्छित्ति कहते हैं।

प्रश्न 9 मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की बंध, अबंध एवं बंध व्युच्छित्ति होतीं है ?

उत्तर मिथ्यात्व गुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति, आहारक द्विक इन तीन प्रकृतियों का अबंध तथा 117 प्रकृतियों का बंध एवं 16 प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती हैं। वे ये हैं– (1) मिथ्यात्व (2) हुण्डक संस्थान (3) नपुंसक वेद (4) असंप्राप्तासृपाटिका संहनन (5) एकेन्द्रिय जाति (6) स्थावर (7) आतप (8) सूक्ष्म (9) अपर्याप्त (10) साधारण (11) द्वीन्द्रिय जाति (12) त्रीन्द्रिय जाति (13) चतुरिन्द्रिय जाति (14) नरक गति (15) नरकगत्यानुपूर्वी (16) नरकायु इन 16 प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 10 सासादन गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति है ?

उत्तर सासादन गुणस्थान में (उपरोक्त 3 अबंध + 16 बंध व्युच्छित्ति) = 19 प्रकृतियों का अबंध है, शेष 101 प्रकृतियों का बंध होता है तथा 25 प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति है। वे ये हैं–

(1) अनंतानुबंधी क्रोध (2) अनं.मान (3) अनं. माया (4) अनं. लोभ (5) स्त्यानगृद्धि (6) निद्रा–निद्रा (7) प्रचला–प्रचला (8) दुर्भग (9) दुस्वर (10) अनादेय (11) न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान (12) स्वाति संस्थान (13) कुब्जक संस्थान (14) हुण्डक संस्थान (15) वज्रनाराच संहनन (16) नाराच संहनन (17) अर्धनाराच संहनन (18) कीलक संहनन (19) अप्रशस्त विहायोगति (20) स्त्रीवेद (21) नीच गोत्र (22) तिर्यग्गति (23) तिर्यग्गत्यानुपूर्वी (24) उद्योत (25) तिर्यंचायु।

प्रश्न 11 मिश्र गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर मिश्र गुणस्थान (उपरोक्त 19 अबंध + 25 बंध व्युच्छित्ति की = 44 प्रकृतियाँ + 2 मनुष्यायु, देवायु इस प्रकार कुल) 46 प्रकृतियों का अबंध हैं। शेष 74 प्रकृतियों का बंध होता है तथा बंध व्युच्छित्ति बिल्कुल नहीं हैं।

प्रश्न 12 असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध और बंध व्युच्छित्ति है ?

उत्तर असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में उपरोक्त 46 में से तीर्थंकर, देवायु, मनुष्यायु ये तीन कम कर देने से शेष रही 43 प्रकृतियों का अबंध है। तथा 77 प्रकृतियों का बंध है, एवं 10 प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति है। वे निम्नानुसार है– (1) अप्रत्याख्यान क्रोध, (2) अप्र.मान (3) अप्र. माया (4)

अप्र. लोभ (5) वज्रवृषभनाराच संहनन (6) औदारिक शरीर (7) औदारिकांगोपांग (8) मनुष्य गति (9) मनुष्यगत्यानुपूर्वी (10) मनुष्यायु।

प्रश्न 13 देशविरत गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर देशविरत गुणस्थान में (उपरोक्त 43 अबंध प्रकृतियाँ + 10 बंध व्युच्छित्ति की) = 53 प्रकृतियों का अबंध, 67 प्रकृतियों का बंध एवं 4 प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है। यथा–प्रत्याख्यान क्रोध (2) प्र.मान (3) प्र.माया (4) प्र. लोभ।

प्रश्न 14 प्रमत्तविरत गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर प्रमत्तविरत गुणस्थान में (उपरोक्त 53 अबंध प्रकृतियाँ + 4 बंध व्युच्छित्ति प्रकृतियाँ) = 57 प्रकृतियों का अबंध। 63 प्रकृतियों का बंध और 6 प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है। यथा ––(1) अस्थिर (2) अशुभ (3) असाता वेदनीय (4) अयशःकीर्ति (5) अरति (6) शोक।

प्रश्न 15 अप्रमत्त गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर अप्रमत्तगुणस्थान में (उपरोक्त अबंध की 57–2 आहारक द्विक + 6 बंध व्युच्छित्ति) 61 प्रकृतियों का अबंध। शेष 59 प्रकृतियों का बंध। 1 देवायु की बंध व्युच्छित्ति।

प्रश्न 16 अपूर्वकरण गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर अपूर्वकरण गुणस्थान में (उपरोक्त अबंध 61 + 1 बंध व्युच्छित्ति) = 62 अबंध प्रकृति, शेष 58 प्रकृतियों का बंध एवं अपूर्वकरण के 7 भागों में से 1, 6, 7 वें भाग में ही बंध–व्युच्छित्ति होती है। यथा प्रथम भाग में (मरण से रहित अवस्था में) (1) निद्रा (2) प्रचला इन दो प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है और छठे भाग के अंतिम समय में (1) तीर्थंकर (2) निर्माण (3) पंचेन्द्रिय जाति (4) प्रशस्त विहायोगति (5) तैजस शरीर (6) कार्मण शरीर (7) आहारक शरीर (8) आहारक आंगोपांग (9) समचतुरस्र संस्थान (10) देवगति (11) देवगत्यानुपूर्वी (12) वैक्रियिक शरीर (13) 5 वर्ण (14) 8 स्पर्श (15) 5 रस (16) 2 गंध (17) अगुरुलघु (18) उपघात (19) परघात (20) उच्छ्वास (21) त्रस (22) बादर (23) पर्याप्त (24) प्रत्येक शरीर (25) स्थिर (26) शुभ (27) सुभग (28) वैक्रियिक आंगोपांग (29) सुस्वर (30) आदेय और अंत में 7 वें भाग में – (1) हास्य (2) रति (3) भय (4) जुगुप्सा इन चार प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है। इस प्रकार कुल (2+30+4) = 36 प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 17 अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में (उपरोक्त अबंध 62 + 36 बंध व्युच्छित्ति) = 98 प्रकृतियों का अबंध, 22 प्रकृतियों का बंध। इस गुणस्थान के 5 भाग हैं, जिसमें क्रमशः (1) पुरुष वेद (2) संज्वलन क्रोध (3) मान (4) माया (5) लोभ इन 5 प्रकृतियों का बंध व्युच्छित्ति होती हैं।

प्रश्न 18 सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों की अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में उपरोक्त (अबंध 98 + बंध व्युच्छित्ति 5 = 103) 103 प्रकृतियों का अबंध, 17 प्रकृतियों का बंध तथा 16 प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है यथा –(1) मतिज्ञानावरण (2) श्रुतज्ञानावरण (3) अवधि ज्ञानावरण (4) मनः पर्ययज्ञानावरण (5) केवल ज्ञानावरण (6) दानान्तराय (7) लाभान्तराय (8) भोगान्तराय (9) उपभोगान्तराय (10) वीर्यान्तराय (11) चक्षुदर्शनावरण (12) अचक्षुदर्शनावरण (13) अवधिदर्शनावरण (14) केवलदर्शनावरण (15) यशःकीर्ति (16) उच्च गोत्र।

प्रश्न 19 उपशांतमोह गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है।

उत्तर उपशांतमोह गुणस्थान में (उपरोक्त अबंध 103 + 16 बंध व्युच्छित्ति) = 119 प्रकृतियों का अबंध, 1 सातावेदनीय का बंध तथा बंध व्युच्छित्ति बिल्कुल भी नहीं है।

प्रश्न 20 क्षीणमोह गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर क्षीणमोह गुणस्थान में उपरोक्त 119 प्रकृतियों का अबंध है। 1 सातावेदनीय का बंध है तथा बंध व्युच्छित्ति बिल्कुल भी नहीं होती है।

प्रश्न 21 सयोग केवली गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध एवं बंधव्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर सयोगकेवली गुणस्थान में उक्त 119 प्रकृतियों का अबंध, 1 सातावेदनीय का बंध, तथा 1 साता वेदनीय की बंध व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 22 अयोग केवली गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का अबंध, बंध एवं बंध व्युच्छित्ति हाती है ?

उत्तर अयोगकेवली गुणस्थान में 120 प्रकृतियों का अबंध है तथा बंध एवं बंध व्युच्छित्ति बिल्कुल भी नही है।

7. सत्त्व-असत्त्व-सत्त्व व्युच्छित्ति

प्रश्न 1 सत्त्व किसे कहते हैं ?

उत्तर जीव से संबंध को प्राप्त हुए कर्म स्कंध बंध के दूसरे समय से लेकर, फल देने से पूर्व समय तक के काल को सत्त्व कहते हैं। इसका दूसरा नाम सत्ता भी है।

प्रश्न 2 सत्त्व को किसी दृष्टान्त द्वारा समझाइये ?

उत्तर धान्य संग्रह के समान, अर्थात् जो मात्र अभी कोठी में बंद है, जिसे अभी निकाला भी नहीं है,उसी प्रकार जिन कर्मों का आस्रव–बंध तो हो गया है किन्तु उदय नहीं हुआ है उन कर्म प्रकृतियों को सत्त्व ऐसा समझना चाहिए।

प्रश्न 3 सत्त्व योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर सभी कर्मों की 148 प्रकृतियाँ सत्त्व योग्य है।

प्रश्न 4 असत्त्व किसे कहते हैं ?

उत्तर जिनकी सत्ता नहीं पायी जावे उसे असत्त्व कहते हैं।

प्रश्न 5 सत्त्व व्युच्छित्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस–जिस गुणस्थान में जितनी प्रकृतियों की सत्त्व व्युच्छित्ति कही गयी है उनका उसी गुणस्थान तक सत्त्व रहता है किन्तु अगले गुणस्थान में उनका सत्त्व नहीं रहता है इसे सत्त्व व्युच्छित्ति कहते हैं।

प्रश्न 6 सत्त्व व्युच्छित्ति को किसी दृष्टान्त द्वारा समझाइये ?

उत्तर जैसे अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में नरकायु की सत्त्व व्युच्छित्ति है अर्थात् नरकायु की सत्ता तो इस गुणस्थान में रहती है किन्तु आगे के गुणस्थान में उनकी सत्ता नहीं रहती, क्योंकि नरकायु की सत्ता वाले के अणुव्रत या महाव्रत नहीं हो सकते हैं।

प्रश्न 7 मिथ्यात्व गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर मिथ्यात्व गुणस्थान में असत्त्व शून्य है तथा सत्त्व 148 और सत्त्व व्युच्छित्ति शून्य है।

प्रश्न 8 मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का युगपत् सत्त्व संभव नहीं है ?

उत्तर मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में जिनके तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व है उसके आहारक द्विक का सत्त्व नहीं होता है

अथवा –

जिसके आहारक द्विक का सत्त्व है उसके तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व नहीं होता है।

विशेष :–

जिसके दोनों का सत्त्व होता है उसके मिथ्यात्व गुणस्थान नहीं होता है। तात्पर्य यह है कि इस गुणस्थान में एक जीव को एक समय में तीर्थंकर और

आहारक द्विक में से किसी एक का ही सत्त्व रहता है परन्तु एक ही जीव में अनुक्रम से व नाना जीव की अपेक्षा उन दोनों का सत्त्व पाया जाता है।

प्रश्न 9 सासादन गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति होतीं है ?

उत्तर सासादन गुणस्थान में तीर्थंकर, आहारक काययोग और आहारक मिश्रकाययोग इन तीन प्रकृतियों का असत्त्व है और शेष 145 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा सत्त्व व्युच्छित्ति शून्य है।

प्रश्न 10 सासादन गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का सत्त्व नहीं रहता है ?

उत्तर सासादन गुणस्थान में एक जीव की अपेक्षा व नाना जीव की अपेक्षा आहारक द्विक तथा तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व नहीं है।

विशेष–

सासादन गुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति के सत्त्व में दो आचार्यों की दो मान्यताएँ है किन्हीं का कहना हैं कि इस गुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व नहीं रहता हैं और किन्हीं का कहना हैं कि सत्त्व रहता है। किन्तु आहारक का सत्त्व नहीं है, क्योंकि इन कर्म प्रकृतियों की सत्ता होने पर यह गुणस्थान नहीं बनता है। अतः इस गुणस्थान में 145 प्रकृतियों का सत्त्व है।

प्रश्न 11 मिश्र गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर मिश्र गुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति का असत्त्व है। शेष 147 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा सत्त्व व्युच्छित्ति शून्य है।

प्रश्न 12 अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में असत्त्व शून्य है। सत्त्व 148 प्रकृतियों का है एवं सत्त्व व्युच्छित्ति 1 नरकायु की है।

प्रश्न 13 क्षायिक सम्यग्दर्शन वाले असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों को चतुर्थ गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का सत्त्व रहता है ?

उत्तर क्षायिक अविरत सम्यग्दृष्टि के 4 अनन्तानुबंधी, 3 दर्शन मोहनीय इन 7 के बिना 141 प्रकृतियों का सत्त्व रहता है।

प्रश्न 14 असंयत गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का सत्त्व है ?

उत्तर उपशम तथा क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि जीवों के असंयत गुणस्थान में 148 प्रकृतियों का सत्त्व है।

प्रश्न 15 किस प्रकृति की सत्ता (सत्त्व) में क्या नहीं होता है ?

उत्तर नकर व तिर्यंच आयु के सत्त्व में देशव्रत, महाव्रत नहीं होते हैं तथा देवायु की सत्ता में क्षपक श्रेणी नहीं होती है।

प्रश्न 16 देशसंयम गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर देशसंयम गुणस्थान में असत्त्व एक नरकायु का है, सत्त्व शेष 147 प्रकृतियों का है। सत्त्व व्युच्छित्ति एक तिर्यंचायु की है।

प्रश्न 17 उपशम तथा क्षयोपशम सम्यग्दर्शन वाले देशसंयत गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों सत्त्व रहता है ?

उत्तर नरकायु के बिना 147 प्रकृतियों का सत्त्व रहता है।

प्रश्न 18 क्षायिक सम्यग्दर्शन वाले देशविरत गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का सत्त्व रहता है ?

उत्तर देशविरत क्षायिक सम्यग्दृष्टि के उक्त 7 व 1 नरकायु = 8 प्रकृतियों के बिना कुल 140 प्रकृतियों का सत्त्व रहता है।

प्रश्न 19 प्रमत्तविरत गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व व सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर प्रमत्तविरत गुणस्थान में नरकायु व तिर्यंचायु इन दो का असत्त्व है। शेष 14 का सत्त्व है एवं सत्त्व व्युच्छित्ति शून्य है।

प्रश्न 20 उपशम तथा क्षयोपशम सम्यग्दर्शन वाले प्रमत्त गुणस्थानवर्तियों के कितनी प्रकृतियों का सत्त्व रहता है ?

उत्तर नरकायु व तिर्यंचायु के बिना 146 प्रकृतियों का सत्त्व रहता है।

प्रश्न 21 क्षायिक सम्यग्दृष्टि प्रमत्तविरत गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का सत्त्व रहता है ?

उत्तर प्रमत्तविरत क्षायिक सम्यग्दृष्टि के उक्त 8 और 1 तिर्यंचायु इन 9 प्रकृतियों के बिना कुल 139 प्रकृतियों का सत्त्व रहता है।

प्रश्न 22 अप्रमत्तविरत गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर अप्रमत्त गुणस्थान में नरकायु व तिर्यंचायु इन दो प्रकृतियों का असत्त्व है। शेष 146 प्रकृतियों का सत्त्व है। तथा अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, देवायु, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति इन 8 प्रकृतियों की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

प्रश्न 23 उपशम तथा क्षयोपशम सम्यग्दर्शन वाले अप्रमत्त गुणस्थानवर्तियों के कितनी प्रकृतियों का सत्त्व रहता है ?

उत्तर नरकायु व तिर्यंचायु के बिना 146 प्रकृतियों का सत्त्व रहता है।

प्रश्न 24 क्षायिक सम्यग्दृष्टि अप्रमत्त गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों का सत्त्व रहता है ?

उत्तर अप्रमत्तविरत के उक्त 139 प्रकृतियों का ही सत्त्व रहता है।

प्रश्न 25 क्षपक अपूर्वकरण गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर क्षपक अपूर्वकरण गुणस्थान में अनंतानुबंधी 4, दर्शन मोहनीय 3, नरक व देवायु इस प्रकार 10 प्रकृतियों का असत्त्व है। शेष 138 प्रकृतियों का सत्त्व है एवं सत्त्व व्युच्छित्ति शून्य है।

प्रश्न 26 क्षपक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर क्षपक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में 9 भाग हैं जिसमें–**प्रथम भाग में**– उपरोक्त 10 प्रकृतियों का असत्त्व है शेष 138 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा (1) नरकगति (2) नरकगत्यानुपूर्वी (3) तिर्यंचगति (4) तिर्यंचगत्यानुपूर्वी (5) द्वीन्द्रिय जाति (6) त्रीन्द्रिय जाति (7) चतुरिन्द्रिय जाति (8) स्त्यानगृद्धि (9) निद्रा–निद्रा (10) प्रचला–प्रचला (11) उद्योत (12) आतप (13) एकेन्द्रिय (14) साधारण (15) सूक्ष्म व (16) स्थावर, इन 16 प्रकृतियों की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

द्वितीय भाग में :– असत्त्व 26 (अनंतानुबंधी 4, दर्शनमोह 3, मनुष्यायु बिना 3 आयु, नरक द्विक, तिर्यग्द्विक, विकलत्रय 3, स्त्यानगृद्धि आदि 3, उद्योत, आतप, एकेन्द्रिय जाति, साधारण, सूक्ष्म, स्थावर) शेष 122 प्रकृतियों का सत्त्व है एवं सत्त्व व्युच्छित्ति 8 प्रकृतियों (अप्रत्याख्यान 4, प्रत्याख्यान 4) की है।

तृतीय भाग में :– असत्त्व 34 (उपरोक्त 26 एवं 8 सत्त्व व्युच्छित्ति की = 34) प्रकृतियों का है। शेष 114 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा 1 नपुंसक वेद की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

चतुर्थ भाग में :– असत्त्व 35 प्रकृतियों का (उपरोक्त 34 असत्त्व+1 सत्त्व व्युच्छित्ति= 35) है। शेष 113 प्रकृतियों का सत्त्व है। 1 स्त्रीवेद की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

पंचम् भाग में :– असत्त्व 36 प्रकृतियों का (उपरोक्त 35 असत्त्व +1 सत्त्व व्युच्छित्ति = 36) प्रकृतियों का है। शेष 112 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा सत्त्व व्युच्छित्ति हास्य, अरति, रति, शोक, भय, जुगुप्सा इन 6 प्रकृतियों की है।

षष्ठम भाग में :– असत्त्व 42 प्रकृतियों का (उपरोक्त असत्त्व 36 + 6 सत्त्व व्युच्छित्ति = 42) है शेष 106 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा पुरुष वेद इस एक प्रकृति की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

सप्तम भाग में :– असत्त्व 43 प्रकृतियों का (उपरोक्त असत्त्व 42 + 1 सत्त्व व्युच्छित्ति प्रकृति = 43) है शेष 105 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा संज्वलन क्रोध इस एक प्रकृति की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

अष्टम भाग में :– असत्त्व 44 (उपरोक्त असत्त्व प्रकृति 43 + 1 सत्त्व व्युच्छित्ति प्रकृति = 44) प्रकृतियों का है शेष 104 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा 1 संज्वलन मान की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

नवम भाग में :– असत्त्व 45 (उपरोक्त असत्त्व प्रकृति 44 + 1 सत्त्व व्युच्छित्ति प्रकृति = 45) 45 प्रकृतियों का है शेष 103 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा 1 संज्वलन माया की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

प्रश्न 27 क्षपक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में कितनी–कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर क्षपक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में असत्त्व 46 (उपरोक्त असत्त्व प्रकृतियों 45 एवं एक सत्त्व व्युच्छिन्न प्रकृति = 46) प्रकृतियों का है। शेष 102 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा 1 संज्वलन लोभ की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

प्रश्न 28 क्षीणमोह गुणस्थान में कितना–कितना प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर क्षीणकषाय गुणस्थान में असत्त्व 47 (उपरोक्त असत्त्व 46+1 सत्त्व व्युच्छित्ति = 47) प्रकृतियों का है। शेष 101 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा 5 ज्ञानावरण, 6 दर्शनावरण (चक्ष ; अचक्षु ; अवधि ; निद्रा ; प्रचला), 5 अंतराय इन 16 प्रकृतियों की सत्त्व व्युच्छित्ति है।

प्रश्न 29 सयोगकेवली गुणस्थान में कितनी–कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर सयोगकेवली गुणस्थान में 63 (उपरोक्त असत्त्व 47 + 16 सत्त्व व्युच्छित्ति = 63) प्रकृतियों का है। शेष 85 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा सत्त्व व्युच्छित्ति शून्य है।

प्रश्न 30 अयोग केवली गुणस्थान में द्विचरम समय में कितनी–कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर अयोग केवली गुणस्थान के द्विचरम समय में असत्त्व 63 केवली (उपरोक्त असत्त्व 63) प्रकृतियों का है। शेष 85 प्रकृतियों का सत्त्व है तथा सत्त्व व्युच्छित्ति 72 (5 शरीर, 5 बंधन, 5 संघात, 6 संहनन, 3 आंगोपांग, 6 संस्थान, 5 वर्ण, 2 गंध, 5 रस, 8 स्पर्श, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुस्वर, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, प्रशस्त विहायोगति, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, निर्माण, अयशःकीर्ति, अनादेय, प्रत्येक शरीर, अपर्याप्त, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, साता या असाता में कोई एक, नीच गोत्र।

नोट : किन्हीं आचार्यों की अपेक्षा से अयोग केवली के उपान्त्य समय में ही साता–असाता दोनों वेदनीय की सत्व व्युच्छित्ति पाई जाती है जिससे फिर वहाँ 73 प्रकृति की सत्त्व व्युच्छित्ति होती है। तथा एक कम हो जाने से अंत समय में 12 प्रकृतियों की सत्त्व व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 31 अयोग केवली गुणस्थान के चरम समय में कितनी–कितनी प्रकृतियों का असत्त्व, सत्त्व एवं सत्त्व व्युच्छित्ति है ?

उत्तर अयोग केवली गुणस्थान के चरम समय में असत्त्व 135 (उपरोक्त 63 असत्त्व + 72 सत्त्व व्युच्छित्ति = 135) प्रकृतियों का है। सत्त्व 13 प्रकृतियों का है और सत्त्व व्युच्छित्ति = 13 (साता–असातावेदनीय में से कोई एक, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति सुभग, त्रस, बादर, पर्याप्त, आदेय, यशःकीर्ति, तीर्थंकर, मनुष्यायु, उच्चगोत्र, मनुष्यगत्यानुपूर्वी) प्रकृतियों की है।

प्रश्न 32 भुज्यमान आयु किसे कहते है ?

उत्तर वर्तमान में भोगी जाने वाली आयु को भुज्यमान आयु कहते हैं।

प्रश्न 33 वध्यमान आयु किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस आयु का बंध तो हो गया है किन्तु उदय अभी नहीं हुआ है, उसे वध्यमान आयु कहते हैं।

8. उदय – अनुदय – उदय व्युच्छित्ति

प्रश्न 1 उदय किसे कहते हैं ?

उत्तर ''सकाल पत्तं उदओ होदित्तिणिद्दिठिं'' कर्म का अपनी स्थितियों को प्राप्त होना अर्थात् फलदान को उदय कहते है।

प्रश्न 2 उदय योग्य कितनी प्रकृतियाँ है ?

उत्तर भेद विवक्षा से 148 प्रकृतियाँ उदय योग्य है। तथा अभेद विवक्षा से 122 प्रकृतियाँ उदय योग्य है क्योंकि 5 शरीर में 5 बंधन और 5 संघात शामिल होने से 10 घटी। इसी प्रकार स्पर्शादि 4 में ही इनके उत्तर भेद शामिल होने से 16 घटी। अतः (10+16) = 26 कर्म प्रकृति को कुल 148 में से कम करने पर उदय योग्य 122 निकल आती है।

प्रश्न 3 किस–किस गुणस्थान में किन–किन मूल कर्मों का उदय होता है ?

उत्तर एक से दस गुणस्थान तक आठों कर्मो का उदय, 11वें 12वें गुणस्थान में मोहनीय के बिना सात कर्मों का उदय, 13वें 14 वें गुणस्थान में 4 अघातिया कर्मों का उदय होता है।

प्रश्न 4 किस–किस गुणस्थान में किन–किन प्रकृतियों के उदय का नियम है ?

उत्तर आहारक शरीर व उसके आंगोपांग इन दोनों कर्मो का उदय छठे प्रमत्त गुणस्थान में ही होता है। तीर्थंकर प्रकृति का उदय सयोग तथा अयोग केवली से ही होता है, मिश्र दर्शन मोहनीय का उदय तीसरे मिश्र गुणस्थान में, तथा सम्यक्त्वप्रकृति का उदय क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि के चौथे से नवें गुणस्थान तक होता है और आनुपूर्वी कर्म का उदय मिथ्यात्व, सासादन तथा चौथा असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान इन तीनों में ही होता है।

सासादन सम्यग्दृष्टि नरक गति को नहीं जाता है, इस कारण उसके नरकगत्यानुपूर्वी कर्म का भी उदय नहीं है और बाकी बची सब प्रकृतियों का उदय होता है मिथ्यात्वादि गुणस्थानों में अपने–अपने उदय स्थान के अंत समय तक जानना।

प्रश्न 5 अनुदय किसे कहते हैं ?

उत्तर उदय के अभाव को अनुदय कहते हैं।

प्रश्न 6 उदय व्युच्छित्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर उदय के बिछुड़ने को उदय व्युच्छित्ति कहते हैं। अर्थात् जिस गुणस्थान में जितनी प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है उसका उदय उस गुणस्थान तक होता है किन्तु आगे के गुणस्थानों में नहीं होता है। उसे ही उदय व्युच्छित्ति कहते हैं।

प्रश्न 7 मिथ्यात्व गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय व उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर मिथ्यात्व गुणस्थान में तीर्थंकर और आहारक द्विक के बिना 117 प्रकृतियों का उदय। तीर्थंकर, आहारकद्विक, सम्यक्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व इन 5 प्रकृतियों का अनुदय। तथा (1) मिथ्यात्व, (2) आतप (3) सूक्ष्म (4) अपर्याप्त (5) साधारण (6) स्थावर (7) एकेन्द्रिय (8) द्वीन्द्रिय (9) त्रीन्द्रिय (10) चतुरिन्द्रिय, इन दस प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है। किन्तु आचार्य श्री यतिवृषभाचार्य के अनुसार यहाँ (उपरोक्त 106 + 5 = 111) प्रकृतियों का उदय (मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण) इन पाँच प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 8 सासादन गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर सासादन गुणस्थान में (उपरोक्त अनुदय 5 + 10 उदय व्युच्छित्ति + 1 नरकगत्यानुपूर्वी = 16) प्रकृतियों का अनुदय, शेष 106 प्रकृतियों का उदय तथा अनंतानुबंधी 4 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

किन्तु आचार्य श्री यतिवृषभाचार्य के अनुसार यहाँ 11 प्रकृतियों का अनुदय उपरोक्त 16 में से एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, स्थावर इन पाँच को कम कर देने से एवं (1) स्थावर (2) एकेन्द्रिय (3) द्वीन्द्रिय (4) त्रीन्द्रिय (5) चतुरिन्द्रिय (6) अनंतानुबंधी क्रोध (7) अनंतानुबंधी मान (8) अनंतानुबंधी माया (9) अनंतानुबंधी लोभ इन 9 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 9 मिश्र गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर मिश्र गुणस्थान में (उपरोक्त 16 अनुदय + 4 उदय व्युच्छित्ति + नरक गत्यानुपूर्वी बिना 3 आनुपूर्वी–1 सम्यक्त्व प्रकृति = 22) प्रकृतियों का अनुदय एवं शेष 100 प्रकृतियों का उदय तथा 1सम्यक् मिथ्यात्व प्रकृति का उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 10 असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में (उपरोक्त अनुदय 22+1 व्युच्छिन्न प्रकृति) = 23–5 (4 आनुपूर्वी 1 सम्यक्मिथ्यात्व प्रकृति) = 18 प्रकृतियों का अनुदय, 104 प्रकृतियों का उदय तथा अप्रत्याख्यान 4, वैक्रियक षटक् 6, (वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक आंगोपांग, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी), 1 नरक आयु, 1 देवायु, 1 मनुष्यगत्यानुपूर्वी, 1 तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, 1 दुर्भग, 1 अनादेय, 1 अयशः कीर्ति इन 17 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 11 देशसंयत गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर देश संयत गुणस्थान में (उपरोक्त 18 प्रकृतियों का अनुदय, 17 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति = 35) प्रकृतियों का अनुदय, शेष 87 प्रकृतियों का उदय तथा प्रत्याख्यान कषाय 4, (तिर्यंचगति, नीचगोत्र, तिर्यंचायु, उद्योत) 8 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 12 प्रमत्तसंयत गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर प्रमत्तसंयत गुणस्थान में (उपरोक्त अनुदय 35 + 8 उदय व्युच्छित्ति प्रकृति–2 आहारक द्विक = 41) प्रकृतियों का अनुदय। शेष 81 प्रकृतियों का उदय, तथा आहारक द्विक, स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला इन पाँच प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 13 अप्रमत्त गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर अप्रमत्त गुणस्थान में (उपरोक्त अनुदय 41+उदय व्युच्छित्ति 5=46) प्रकृतियों का अनुदय। शेष 76 प्रकृतियों का उदय एवं सम्यक्त्व प्रकृति, अर्धनाराच संहनन, कीलक संहनन एवं असंप्राप्तासृपाटिका संहनन इन 4 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 14 अपूर्वकरण गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर अपूर्वकरण गुणस्थान में (उपरोक्त अनुदय 46+4 बंध व्युच्छिन्न=50) प्रकृतियों का अनुदय। शेष 2 प्रकृतियों का उदय एवं हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा इन 6 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 15 अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में (उपरोक्त अनुदय 50+6 बंध व्युच्छिन्न = 56) प्रकृतियों का अनुदय। शेष 66 प्रकृतियों का उदय। तथा इन 6 सवेदभाग में तीनों वेद, अवेद भाग में संज्वलन क्रोध, मान, माया प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 16 सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में (उपरोक्त अनुदय 56+6 उदय व्युच्छित्ति = 62) प्रकृतियों का अनुदय। शेष 60 प्रकृतियों का उदय एवं सूक्ष्म कृष्टि को प्राप्त 1 सूक्ष्म लोभ प्रकृति की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्रश्न 17 उपशान्तमोह गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का उदय, अनुदय एवं उदय व्युच्छित्ति होती है ?

उत्तर उपशान्तमोह गुणस्थान में (उपरोक्त अनुदय 62+1 उदय व्युच्छिन्न प्रकृति = 63) प्रकृतियों का अनुदय। शेष 59 प्रकृतियों का उदय तथा

पृष्ठ पाठ	प्रश्न	पाद टिप्पणी शास्त्र	गाथा नं.
	25	क्ष. सा. / मू.	418 / 499
	26–30	धवला पुस्तक	12,14 / 4,2,7, 41–42 / 32 / 1
	31	ल. सा.	80 / 114
	32	क.पा.	5 / 4–22
	33–34	धवला पुस्तक	12 / 4, 2,13,41 / 1–2
	35	धवला पुस्तक	1 / 1,1,27
	36–46	गोम्मटसार कर्मकांड	438–440
	47	गोम्मटसार कर्मकांड	441
	48	गोम्मटसार कर्मकांड	442–443
	49–50	गोम्मटसार कर्मकांड	444
	51–55	गोम्मटसार कर्मकांड	445
(5. संक्रमण के अन्य भेद)	1.	धवला पुस्तक	16 गा. 1 / 409
	2.	गोम्मटसार कर्मकांड	349,409,416,412
	3.	गोम्मटसार कर्मकांड	415
	4.	गो.क.का., जै.सि.को.	413 भा. 4 / 87
	5.	गो.क.का., जै.सि.को.	426
	6.	गो.क.का., जै.सि.को.	409 भा. 4 / 87
	7.	गो.क.का., जै.सि.को.	419–423
	8.	गोम्मटसार कर्मकांड	409, 416
	9.	धवला पुस्तक	16 पृ. 409
	10.	जै.सि.को., गो.क.का	427, 428
	11.	गोम्मटसार कर्मकांड	भाग 4, पृ. 90 / 409, 416
	12.	गोम्मटसार कर्मकांड	412
	13.	गोम्मटसार कर्मकांड	417
	14.	गोम्मटसार कर्मकांड	425
	15.	गोम्मटसार कर्मकांड	421, 422
	16.	गोम्मटसार कर्मकांड	424
	17.	गोम्मटसार कर्मकांड	419
	18.	गोम्मटसार कर्मकांड	420
	19.	गोम्मटसार कर्मकांड	421
	20.	गोम्मटसार कर्मकांड	422
	21.	गोम्मटसार कर्मकांड	423
	22.	गोम्मटसार कर्मकांड	424
	23 से 25	गोम्मटसार कर्मकांड	416
	26 से 27	गोम्मटसार कर्मकांड	410
	28, 29	जैनेंद्र सिद्धांत कोश	भाग 4 पृ. 86
		कषाय पाहुड	3 / 3–22 / 411, 4–12 / 233,434 / 4
	30.	धवला पुस्तक	6 / 1, 9–8, 16 / गा. 21 / 346

पृष्ठ पाठ	प्रश्न	पाद टिप्पणी शास्त्र	गाथा नं.
(6. बंध, अबंध व बधं व्युच्छित्ति)	1	गोम्मटसार कर्मकांड	89
	2	गोम्मटसार कर्मकांड	3
	3	गोम्मटसार कर्मकांड	4
	4	गोम्मटसार कर्मकांड	35
	5	गोम्मटसार कर्मकांड	35
	6	गोम्मटसार कर्मकांड	452
	7		
	8	गोम्मटसार कर्मकांड	401
	9 से 22	गोम्मटसार कर्मकांड	103–4 (सारणी)
(7. सत्त्व असत्त्व व सत्त्व व्युच्छित्ति)	1	कषाय पाहुड	1 / 1 / 13–14 / 250 291 / 6
	2	पंच संग्रह प्राकृत	3 / 3
	3	गोम्मटसार कर्मकांड	38
	4		342
	5		
	6		
	7 से	गोम्मटसार कर्मकांड	333 एवं
	12 तक	गोम्मटसार कर्मकांड	342
	13	गोम्मटसार कर्मकांड	355
	14	गोम्मटसार कर्मकांड	355
	15	गोम्मटसार कर्मकांड	334
	16,17	गोम्मटसार कर्मकांड	342
	18	गोम्मटसार कर्मकांड	336 / 342
	19	गोम्मटसार कर्मकांड	342
	20,21	गोम्मटसार कर्मकांड	355
	22	गोम्मटसार कर्मकांड	342
	23,24	गोम्मटसार कर्मकांड	355
	25 से 31	गोम्मटसार कर्मकांड	342
	32,33	गोम्मटसार कर्मकांड	345
(8. उदय, अनुदय व व्युच्छित्ति)	1	गोम्मटसार कर्मकांड	439
	2	गोम्मटसार कर्मकांड	263
	3	गोम्मटसार कर्मकांड	454
	4	गोम्मटसार कर्मकांड	261
	5 से 7	गोम्मटसार कर्मकांड	262
	8 से 21	गोम्मटसार कर्मकांड	263,264 (सारणी)

उपसर्ग विजेता प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागरजी महाराज द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान दिग. जैन विद्या पीठ भिण्ड द्वारा प्रकाशित साहित्य।

A संस्कृत टीका साहित्य
1. वारसाणुवेक्खा (सर्वादय टीका संस्कृत) 150/–
2. रयणसार (रत्नत्रयवर्धीनी टीका) 150/–

B शोध पूर्ण साहित्य
3. शुद्धोपयोग 25/–
4. सम्यग्दर्शन 25/–
5. आगम चक्खू साहू 20/–
6. सल्लेखना से समाधि 30/–
7. संत साधाना के प्रेरक प्रसंग 15/–
8. परम दिगम्बर जैन मुनि (हिन्दी, मराठी, तमिल, कननड़, इंग्लिश) 40/–
9. सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म 30/–
10. तीर्थंकर दिव्य दर्शन 30/–
11. तीर्थकी दर्शन
12. व्यसन विचार (हिन्दी, मराठी, इंग्लिया) 25/–
13. फूल नहीं है कांटे
14. संस्कार सुरभि 15/–
15. जिनेन्द्र दर्शन, जिनेन्द्र पूजन 10/–
16. आध्यात्मिक शंका समाधान 30/–
17. आध्यात्मिक तत्व–चर्चा 15/–

C चिंतन साहित्य
18. चैतन्य चिंतन भाग – 1, 2, 3 15/–

D बालकोपयोगी साहित्य–
19. बाल विज्ञान भाग–1,2,3 (हिन्दी, इंग्लिश, मराठी, कन्नड़) 10/–
20. बाल विज्ञान भाग–4 10/–
21. कर्म विज्ञान भाग – 1 (हिन्दी, इंग्लिश) 10/–
22. कर्म विज्ञान भाग – 2,3 10/–

E कथा साहित्य–
23. नैतिक कथा मंजूषा भाग–1,2,3 15/–

F अनुवाद साहित्य
24. वारसाणुवेक्खा
25. परमस्त्रार्चना 20/–

G पद्य साहित्य
27. भावों के विशुद्ध क्षण 15/–
28. मुक्ताजंली भाग 1,2
29. नव देवता निर्माण क्षेत्र पूजा

H संकलित/सम्पादित साहित्य
30. साधना से समाधि 20/–
31. विमल नित्य पाठवली 25/–
32. आराधना 10/–
33. सुभाषित सहस्त्रं 40/–
34. आप्त अर्चना
35. मानतुंग की अमरभक्ति (सचित्र भक्तामर)
36. साधना 10/–
37. अनुप्रेक्षा 10/–
38. जिनागम दीप 151/
39. सम्मेद शिख विधान
40. चारित्र शुद्धि व्रत 25/–
41. साधना के सोपान
42. करूणामूर्ति संत
43. तपस्वी सम्राट
44. यज्ञोपवित विधि

I एकांकी/नाटक साहित्य
45. सम्य मित्र सम्य दृष्टि
46. प्रद्युन्न हरण

J आचार्यश्री के व्यक्तित्व पर आधारित साहित्य
47. विरागाभिनंदन अभिनंदन
48. निस्पृही संत भाग–1,2 60/–
49. विराग सेतु (महाकाव्य) 100/
50. संत काव्य की परम्परा में आचार्य विरागसागरजी 64/–
51. कमल के महाकमल
52. घटनायें ये जीवन की 80/–
53. दिगम्बरत्व के चितेरे 150/
54. विराग सिंधु की अर्मिया 15/–
55. विराग वाटिका 41/–
56. भक्ति की झंकार 25/–

K प्रवचन साहित्य
57. धर्म पियूष 30/–
58. ऐसे चलो मिलेगी राह 40/–

59. दूर नहीं है मंजिल 30/–
60. उड़ रे पंछी
61. तीर्थंकर वर्धमान 15/–
62. पहले देव पूजा फिर काम पूजा 25/–
63. तीर्थंकर ऐसे बनो 85/–
64. तट की ओर
65. सिर्फ दो प्रवचन 10/–
66. इष्टोपदेश
67. मानतुंग की अमर भक्ति 150/
68. कल्याणक महोत्सव 20/–
69. दान तीर्थ 20/–
70. धर्म के दश सोपान 20/–
71. जीवों पर दया करो– शुद्ध शाकाहार करो 20/–
72. बुराईयाँ ही जेल – अच्छाईयां ही मुक्ति 10/–
73. प्रवचन वर्षा 15/–
74. कर्तव्य मेव कर्तव्य 20/–
75. श्रद्धा प्रसून
76. मोक्ष की राहें
77. विरागामृत
78. समाधि तंत्र
79. समयोचित् शिक्षाये भाग 1,2,3 20/–
80. विराग मंथन 5/–
81. रजत पुष्प 51/–
82. कहानी सबसे सुहानी 30/–
83. अक्षय निधि 10/–
84. संस्कार की लहरें 10/–
85. चलो चले प्रभु दर्शन को 20/–
86. आध्यात्मिक पर्व (दशलक्षण धर्म) 30/–
87. घर घर की कहानी
88. पद्मनंदि पंचविंशति : अधिकार 1 धर्मोपदेशामृतम्
89. पद्मनंदि पंचविंशतिःअधिकार 2 दानोपदेशम्
90. पद्मनंदि पंचविंशति : अधिकार 3 अनित्यपञ्चाशत्
91. पद्मनंदि पंचविंशति : अधिकार 4 एकत्व सप्तति तथा यतिभावनाश्टकम्
92. पद्मनंदि पंचविंशति : अधिकार 6 उपासक संस्कारः
93. पद्मनंदि पंचविंशति : अधिकार 7 देशोव्रतोद्योतनम्
94. पद्मनंदि पंचविंशति : अधिकार 8,9 सिद्धस्तुति तथा आलोचना
95. मेरी भावना प्रवचन
96. फार यूथ प्रोगेस
97. आचार्य विरागसागर साहित्य दर्शन

साहित्य प्राप्ति स्थानः

1. श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिंड (म.प्र.) सम्पर्क सूत्रः पं. वीरेन्द्र जैन मो.–9754803220
2. आचार्य श्री विरागसागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज) पुष्प विहार कॉलोनी, बीना – 470113 जिला–सागर (म.प्र.) सम्पर्क सूत्रः प्रदीप शाह मो.– 9425135816
3. विराग फाउण्डेशन C/o श्री अरूण कोटड़िया, उस्मानपुरा, अमदाबाद (गुजरात) 380013 सम्पर्क सूत्रः अरूण कोटड़िया मो.– 9825900124
4. श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह 12–B, वर्धमान सोसायटी, डेरी रोड़, मेहसाना–2 (गुजरात) सम्पर्क सूत्रः श्री भूपेन्द्र शाह मो.– 9898494914, 9429452020